

श्रीसार्तारामाभ्या नम
श्रीहनुमते नम
प्रस्थानत्रयानन्दभाष्यकाराय नमोनम
जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य प्रणीत
श्रीवैष्णवमतोज्जभास्कर परिशिष्ट

❀ श्रीरामार्चनपद्धतिः ❀

तदित्थं मुमुक्षुरुपासको मुहूर्तमात्रावशिष्टाया रात्रौ प्रतिबुध्यनिरालसः प्रातः
समुत्थाय धौतपाणिपादः प्राङ्मुखः स्थित्वा—

हरिः ॐ सचन्तयदुषसःसूर्येणचित्रामस्य केतवोराम विन्दन ‘

आयन्नक्षत्रं ददृशेदिवो न पुनर्यतो न किरद्धानुवेद ॥

हरिः ॐ अर्वाचीसुभगे ? भव सीते ? वन्दामहेत्वा ।

यथानः सुभगाऽससि यथानः सुफलाऽससि ॥

इत्यादिकमनुसन्धाय बहिर्निर्गत्य दक्षिणकर्णे यज्ञसूत्रं संवेष्ट्य उत्तराभिमुखो
भूत्वा सूत्रपुरीषोत्सर्जनं कुर्यात् । ततोऽतन्द्रितो गन्धलोपकरं शौचं विधायसप्तकृत्वः
सजलामलकमात्रमृत्तिकाभिर्गुदप्रक्षालनं कुर्यात् । त्रिः सजलंमृत्तिकाभिलिङ्गशौचं च
ततो दक्षिणवामहस्तौ प्रत्येकं दशकृत्व सजलंमृत्तिकाभिः प्रक्षाल्यदक्षिणवामपादौ च
पञ्चकृत्वस्ताभिः प्रक्षाल्यषोडशकृत्वागण्डूषमाचरेत् । ततोद्विराचम्य शरीरशुद्धयेस्नानं
प्रोक्षणादिकं वा यथाशक्तिविधाय गुरुपरपरानु सन्धानपूर्वकतत्तन्मन्त्रानुच्चार्योद्ध्व-
पुण्ड्रान्धृत्वा पुनः स्वाचार्यं ध्यात्वा गुरुपरपरानुसन्धानपूर्वकं रहस्यत्रयं चानुसन्धाय
पश्चात् सन्ध्यावन्दनादिकर्मतत्प्रयोगविधिना भगवदाज्ञया भगवत्कैर्कर्यत्वेन च कुर्यात् ।

पश्चिमान्नाय श्रीरामानन्दाचार्यपीठाधीश्वर

卐 स्वामीरामेश्वरानन्दाचार्य 卐

卐 प्रणीता गङ्गा 卐

सीताकान्तसमारम्भां रामानन्दार्यमध्यमाम् । रामप्रपन्नगुर्वन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम् ॥

अनादि काल से 'ससार सागर मे स्वकर्म जालाभिभूत होकर संसरणशील जीवों के उद्धार हेतु
जगद्गुरु श्रीसुरमुरानन्दाचार्यजी ने जगदुद्धार हेतु अवतरित “रामानन्द स्वयं राम प्रादुर्भूतो महीं
तले” इस आगम शास्त्र बोधित करुणाशील जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी महाराज से “तत्त्वं किम्”

११४ आदि दश प्रठन क्रिये थे । उन प्रठनों में पाचवा प्रठन 'वर्म एकोऽस्ति कश्च' ११४ श्री वैष्णवमततावजभास्कर के इस पाचवे प्रठन के जवाब में आनन्द भाष्यकार महाप्रभुजी ने सर्वधर्म मुख्यात्मक श्रीवैष्णवधर्म निरूपण प्रसंग में अर्चावतार की चर्चा 'अर्चावतारोऽपि च' ५१११ तथा 'स्वयं व्यक्तश्च' ५११२ इन श्लोको से कर-

“आवाहनासनाभ्या च पाद्याद्याचमनैस्तथा ।

स्नानवस्त्रोपवीतैश्च गन्धपुष्पसुधूपकैः ॥५.१३

दीपनैवेद्यताम्बूलप्रदक्षिणविसर्जनैः । षोडशार्चाप्रकारैस्तमेतैरर्चेन्मदासुधीः ॥५.१४”

का उपदेश किया । अर्थात् मुमुक्षु भजनान्दी महापुरुष प्रातः उठकर के शौचादि स्नानान्त प्रात्यहिक कर्म कर लेने के बाद समाजित प्रजा स्थानादि में उपस्थित होकर आवाहन आसन पाद्य आर्घ्य आचमन स्नान वस्त्र यज्ञसूत्र गन्ध पुष्प धूप दीप नैवेद्य ताम्बूल प्रदक्षिणा और विसर्जनान्त षोडशोपचार-विविध से समन्वित सर्वेश्वर श्रीरामजी की सर्वदा पूजा करे । पूजक यदि द्विज होतो पुरुषसूक्त विद्यान से पूजन करे द्विजेतर होतो पौराणिक विधि से निवृत्तरूप से अर्चना करे । इस प्रकार अति सक्षिप्त रूप से अर्चाश्रीविग्रह सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी की सेवा का उपदेश महा प्रभुजी ने किया । पर इस सूत्रात्मक उपदेश से सामान्य जन जिन प्रकार से सर्वेश्वरजी की सेवा होनी चाहिये उस प्रकार नहीं कर पायेंगे ऐसा विचार कर कारुणिक आचार्य श्रीने श्रीमुख से ही 'श्रीरामार्चपद्धति' का उपदेश किया । जो कुछ विस्तृत तथा गद्य पद्य मय होने से स्वमुखारविन्द से ही उपदिष्ट श्रीवैष्णवमततावजभास्कर के खिल-परिशिष्ट भाग के रूप में प्रसिद्ध है । कई एक व्यक्ति इस श्रीरामार्चनपद्धति को भाष्यकार की अलग कृति के रूप में परिगणित करते हैं क्रिया सौविध्य के लिये अलग से मुद्रित भी है पर यह है एक ग्रन्थ भास्कर का परिशिष्ट भाग ही महभारत का शेषभाग हरिवंश के समान । अत आचार्य प्रभू-“तद्विद्यम्” इत्यादि से पूर्वोपदिष्ट प्रसंगानु सन्धानपूर्वक उपदेश प्रारम्भ कर रहे हैं ।

भवसागर से मुक्ति की इच्छा वाले साधक को चाहिये कि दो घड़ी रात्रि शेष रहते ही प्रातः काल में सर्वथा आलस्य रहित होकर उठ जाय । अनन्तर हाथ पैर धोकर यथेच्छ कुल्लाकर पूर्व-दिशा के तरफ मुख कर बैठ जाय । तब अत्यन्त तन्मयता से-“हरि ॐ सचन्त” तथा “अर्वाची” इन मन्त्रों का तथा प्रातः स्मरण के पांच श्लोको का मधुर स्वर से अर्थानुसन्धानपूर्वक कीर्तन करे । अनन्तर बाहर दूर जाकर दाहीने कान में यज्ञसूत्र को वेष्टित-चढ़ाकर उत्तराभिमुख होकर मल-मूत्रका त्याग करे । पुनः शौच तथा दुर्गन्ध निवारणार्थ आलस्य रहित होकर आवले के दाने के बराबर विशुद्ध मिट्टी तथा शुद्ध जल से प्रत्येकवार सात बार गुदा को तीन बार लिंग को विधिवत् प्रक्षालन कर फिर पूर्व क्रम से ही दशवार दोनो हाथ तथा पांचवार दोनो पैरों का प्रक्षालन करे । अनन्तर शुद्ध जल से सोलह कुल्ला करके शुद्ध हो जाय । इसके बाद दो बार आचमन कर देह शुद्धि के लिये विशुद्ध जल से स्नान करे-देश काल स्वास्थ्यादि के अनुकूल्य से प्रोक्षणादि को सम्पन्न करे । इसके बाद “श्रीराम जनकान्तजामनिज वेधो वशिष्ठावृषी यागीश च पराशर श्रुतिविद व्यास जिताक्ष शुक्लम् । श्रीमन्त पुरुषोत्तम गुणनिधि गङ्गावरदाद्यान्यतान् स्त्रीमद्राघवदेशिञ्च वरद स्वार्थवर्य श्रेय ॥ इत्यादि समस्त पूजाचर्यों को अपने आचार्य-अपने दीक्षा गुरु तक सभी का अनुसन्धान सादर स्मरण कर उन-उन मन्त्रों के उच्चारण पूर्वक बाह्य उद्भूत पुण्ड्रों को धारण करके अपने आचार्य-दीक्षागुरु तथा आचार्य परंपरा के-

सीताकान्तसमागम्भा रामानन्दार्य मध्यमाम् ।

अस्मदाचार्यपर्यन्ता वन्दे गुरुपरम्पराम् ॥

इस श्लोक के स्मरणपूर्वक रहस्यत्रय-मन्त्रराज पडभर चरम मात्र तथा शरणागति मन्त्रों का सार्थ स्मरण कर अनन्तर भगवान् की आज्ञा से सर्वेश्वर श्रीरामभद्रजी का कैकर्य बुद्ध्या सन्ध्या वन्दनादि नित्य कर्मों को शास्त्रीय विधान के अनुसार सम्पादन करे ।

ततो दिव्यमङ्गलविग्रहस्य साङ्गसायुधमपरिवारस्य श्रीसीतालक्ष्मणममेतस्य भगवतो
रामभद्रस्य मनमैव एकैकमङ्गलं ब्रह्मसृष्टिलोकोत्तमसौन्दर्यलाप्याढ्यं ध्यायन् दिव्यैः
षोडशोपचारैरर्चनं विदध्यात् ।

इसके बाद प्रत्येक अग प्रत्येक आयुव-सत्तादि परिवार सर्वेश्वरी श्रीसीताजी तथा श्रीलक्ष्मणजी से सम्पृक्त दिव्य मङ्गल श्रीविग्रह सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी के सर्वलोकोत्तर सौन्दर्यलावण्य से युक्त पृथक् पृथक् अग का मन से ही सयक् ध्यान करते हुये दिव्य षोडशोपचार से मानसिक अर्चना करे ।

माध्याह्निकानुष्ठानसमयेऽपि भगवच्चरणारविन्दं स्वाचार्यचरणारविन्दं च ध्यायन्
स्नात्वा भगवद्विभूतिर्भगवच्छरीरभूतान् देवर्षिपितृन् ध्यात्वा संतर्प्य च धौतवस्त्रादिकं
परिधायार्चम्य पूर्ववदेवोर्ध्वपुण्ड्रादिकं विधायैवमेव भगवदागधनन्वेनैव माध्याह्निकानु-
ष्ठानमपि कुर्यात् ।

भगवान् के मध्याह्निक आराधन के समय में भी सर्वेश्वर श्रीरामभद्रजी के श्रीचरण कमल तथा स्वाचार्य देव के चरणकमलों का ध्यान करते हुए स्नान क्रिया सम्पादन करके सर्वावार श्रीराम जी की विभूति तथा शरीर भूत देवताओं और पितरों का ध्यान पूर्वक तर्पण कर । बाद में स्वच्छ वस्त्र धारण कर आचमन कर के पहले बताए गए विधिके अनुसार ही ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण करे । इसी प्रकार से सर्वदा सर्वेश्वर श्रीरामजी की आराधना बुद्ध्या मध्याह्निक क्रिया का सम्पादन करे ।

अथैवमर्चनयोग्यो मुमुक्षुरुपासको भगवन्मन्दिरं प्रविश्य

श्रीरामं जनकात्मजामनिलजं वेधोवसिष्ठावृषी

योगीशश्च पराशरं श्रुतिविदं व्यासं जिताक्षं शुक्रम् ।

श्रीमन्तं पुरुषोत्तमं गुणनिधिं गङ्गाधराद्यान् यतीञ्च

श्रीमद्राघवदेशिकञ्च वरदं स्वाचार्यवर्यश्रेयम् ॥

इत्यादि श्रीगुरुपरम्परादिकमनुसन्धत्साष्टाङ्गत्वेन दण्डवद्भगवन्तं प्रणम्य,
अर्चनपात्रादीनि संमृज्य शुद्धजलेन संप्रक्षाल्य समर्चनीयदेवस्य दक्षिणपाद्वर्षे समुपविश्य
पूर्वदिनसमर्पितगन्धमाल्यतुलसीदलादिकमपनीयपीठोपरिसन्निवेश्य आग्नेयाढारभ्य
प्रदक्षिणक्रमेण, अर्घ्यपाद्याचमनस्नानपात्राणि संस्थाप्य तेषां मध्ये शुद्धजलापात्रं निधाय ।

पूर्व में प्रदर्शित क्रिया के द्वारा सर्वेश श्रीरामजी की अर्चना के योग्य हुए सायुज्य मोक्ष की इच्छावाले उपासक को भगवान् के मन्दिर में प्रवेश कर श्रीरामजी श्रीजानकीजी श्रीहनुमानजी श्रीब्रह्माजी

श्रीवशिष्ठऋषिजी योगियो मे श्रेष्ठ श्रीपराशरजी वेदज्ञाता श्रीव्यासजी जितेन्द्रिय श्रीशुकदेवजी सर्वगुणो के खजाने ऐश्वर्यशाली श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी बोवायन यतियो मे श्रेष्ठ श्रीगङ्गावरार्यजी आदि समस्त पूर्वाचार्यो के साथ अपने गुरुदेव वरदाता श्रीमान् जगद्गुरु श्रीराघवानन्दाचार्यजी का मै आनन्दभाष्यकार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य आश्रय लेता हूँ अर्थात् समस्त पूर्वाचार्यो को सादर दण्डवत् प्रणाम करता हूँ ।

श्लोक के आदि शब्द से श्रीसदानन्दाचार्यजी श्रीरामेश्वरानन्दाचार्यजी श्रीद्वारानन्दाचार्यजी श्रीदेवानन्दाचार्यजी श्रीश्यामानन्दाचार्यजी श्रीश्रुतानन्दाचार्यजी श्रीचिदानन्दाचार्यजी श्रीपूर्णानन्दाचार्यजी श्रीश्रियानन्दाचार्यजी तथा श्रीह्यानन्दाचार्यजी का ग्रहण होता है । क्योंकि श्रीआचार्यजी के परम्परा मे श्रीरामजी से लेकर उनके गुरुदेव जगद्गुरु श्रीराघवानन्दाचार्यजी तक २१ आचार्य है । अत आचार्य प्रवर आनन्दभाष्यकार श्रीरामानन्दाचार्यजी श्रीसम्प्रदाय (श्रीरामानन्द सम्प्रदाय) के २-वे आचार्य है । इत्यादि श्रीगुरु परम्परादिक का अनुसन्धान करते हुये समाराधनीय भगवान को सादर साष्टांग दण्डवत् प्रणाम कर के पूजा के पात्रो को मलकर शुद्ध जल से वोकर स्वच्छ करे अनन्तर समाराधनीय देव के दाहिने भाग मे बैठकर पहले दिन के चढे पुष्प चन्दन गन्ध तुलसीदल माला आदि को वहाँ से हटाकर पीठ वाजोट-डाली आदि रखकर एक तरफ कर दे । अनन्तर अग्नि कोण से प्रारम्भ कर के प्रदक्षिणा क्रम से अर्घ्य पात्र पाद्यपात्र आचमनीयपात्र स्नानीयपात्रो का स्थापन कर उनके मध्य मे शुद्ध जलपात्र का स्थापन करे ।

तत्रार्धपात्रेसिद्धार्थाक्षतकुशाग्रतिलयवगन्धफलपुष्प सहित जलं निक्षिपेत् १ ।
दूर्वाविष्णुपर्णीपद्मश्यामाकमलसहित जलं पाद्यपात्रे निक्षिपेत् २ । एलालमङ्गकङ्कोलजा-
तिसहितं जलमाचमनपात्रे निक्षिपेत् ३ । कोष्टमाजिष्ठहरिद्रामुस्ताशैलेयचम्पकवचाकर्पूर-
लामज्जकसहितं जलं स्नानपात्रेनिक्षिपेत् ४

अनन्तर अर्धपात्र मे सरसो अक्षत कुशाग्र तिल यव गन्ध फल फूल सहित शुद्ध छना हुआ जल डाले । पाद्यपात्र मे दुर्वा विष्णुपर्णी कमल तथा श्यामाक-सावा सहित जल डाले । आचमनीय पात्र मे इलायची लवंग, ककरोल तथा जायफल सहित जल डाले । स्नानीयपात्र मे कूठ मजीठ हल्दी मोथा छडीला चम्पा वच कपूर तथा लामज्जरु-खस सहित जल डाले ।

तदेतदभावेतु तद्वाक्योच्चारणपूर्वकं तुलसीदलमेव तत्तत्तोयपात्रे निक्षिपेत् । श्री मन्त्रराजेन प्रत्येकं तत्तत्पात्रां संमन्त्र्य सुरभिमुद्रां च प्रदर्श्य वामपाद्वे पूर्णकुम्भं निधाय अन्यानि पूजाद्रव्याणि दक्षिणपाद्वे च निधाय मनसा स्वाचार्यमध्यादिभिः सम्पूज्य तद्वस्तेनैवाराधनं स्वीकार्यमिति भगवतेविज्ञाप्य प्राणायामत्रयं च कृत्वा भगवदुत्थापनाय भगवन्तं प्रार्थयेत् ।

पूर्वोक्त उन सभी वस्तुओ के अभावमे उन उन वस्तुओका नाम लेकर अर्ध्यादि पात्रों मे केवल तुलसी सहित जलडाले । इसके बाद अर्ध्यादि सभी पात्रो को श्रीतारक मन्त्र से संमन्त्रित करके सुरभिमुद्रा दिखाकर अपनी वाम भाग मे शुद्ध जल से भरा पात्र तथा अन्य पूजन की समस्त सामग्री को अपनी दाहिने भाग मे रखकर अपने आचार्यजी की अर्ध्यादि से मानसिक

पूजनकरके श्रीआचार्य देव के द्वारा ही मानसिक भावना से पूजन वस्तुओं को आराध्य देव को समर्पण करे। तात्पर्य यह कि भगवान् ? मैं तो अल्पज्ञ हूँ अतः आपकी आराधना में पूर्णतया असमर्थ हूँ अतः हमारे श्रीआचार्य देवके द्वारा ही आप मेरी आराधना को स्वीकार करें। इस प्रकार प्रार्थनों करके तीन बार प्राणायाम करके आराध्यदेव को शयन से उठाने के लिये इन निम्नलिखित श्लोको द्वारा अतिविनम्र भाव से प्रार्थना करें।

कौशल्यासुप्रजाराम ? पूर्वासन्ध्या प्रवर्तते । उत्तिष्ठनरशार्दूल कर्त्तव्यं दैवमाह्निकम् ।
उत्तिष्ठोत्तिष्ठभद्रं ते त्यजनिद्रा जगत्पते ? । त्वदीयोत्थानमात्रेण उत्थितं भुवनत्रयम् ॥२॥
उत्तिष्ठोत्तिष्ठश्रीराम ? भद्रं ते करुणानिधे ? । उत्तिष्ठ जानकीकान्त ? त्रैलोक्य मङ्गलंकुरु
अप्रमेयकृपासिन्धुस्वरूपे ? रामसुप्रिये ? । सुप्रभातानिशा सीते ? श्रीरामाभिमुखीभवा ॥४॥
लक्ष्मणोत्तिष्ठ भद्रन्ते रामकैङ्कर्यतत्पर ? । सौमित्रे ? वीररामस्यप्राणप्रियतरप्रभो ? ॥५॥

श्रीभगवद्रामचन्द्राभिमतानुरूपगुणविभवैश्वर्यशीलाद्यनवधिकातिसयासंख्येयकल्याणगुणगणा पद्मवनालयां पद्माननां पद्मदलायताक्षी नित्यानपायिनी भगवती निरवद्यां श्रीसीतां श्रीरामदिव्यमहिषीमखिलजगन्मातरमशरणशरण्यामनन्यशरणः शरणमहं प्रपद्ये।

स्वशेषभूतेन मया स्वीयैः सर्वपरिच्छदैः ।

विधातुं प्रीतमात्मानं देवः प्रक्रमते स्वयम् ॥

इति श्लोकञ्चानुसन्धाय पञ्चोपनिषन्न्यासं कुर्यात् ।

अनन्य पतिव्रता श्रीकौशल्यादेवी के सुपुत्र सर्वेश्वर हे रामजी प्रातःकालिन सन्ध्या का समय हो रहा है अतः हे नरशार्दूल श्रीरामजी आप शैया से उठे कारण यह कि प्रातःकाल हो रहा है अतः देवाराधनादि दैनिक क्रियाओं को सम्पादन करना चाहिये। उन दैनिक क्रियाओं को सम्पादनार्थ आपका शरणापन्न यह सेवक उपस्थित है अतः सर्वेश्वर श्रीरामजी ? आप जागें ॥१॥ हे जगत्पति श्रीरामजी ? आप निद्रा को त्याग कर जग जाय सुकोमल शैया को त्यागकर उठ जाय हे जगन्नियन्ता ? आप का कल्याण हो । प्रभो ? आपके उत्थान-यानी उठ जाने से तीन लोक उठ जायगा अर्थात् तीनों लोकके जीव जगकर अपनी अपनी नित्यनैमित्तिक प्रवृत्तियों में लगाजायेगे अतः लोगों की सत्प्रवृत्ति के लिये आप जागे ॥२॥ हे श्रीरामजी ? आप उठ जाय हे करुणा के समुद्र श्रीरामचन्द्रजी आप जग जाय प्रभो ? आपका कल्याण हो । हे जानकीकान्त श्रीरामजी ? आप उठ जाय । उठ कर तीनों लोकों का कल्याण करें ॥३॥ अमित कृपा के सिन्धु स्वरूपा हे श्रीजानकीजी ? हे श्रीराम प्रिया श्रीसीता जी ? प्रातःकाल हो गया है । अतः सर्वेश्वरी हे श्रीसीता जी ? उठकर नित्यकर्मों से निवृत्त होकर सर्वेश श्रीरामजी के अभिमुख सम्मुख हो जाय तथा श्रीरामचन्द्रजी की आज्ञा के अनुसार सब कृत्य सम्पादन करावे ॥४॥ हे श्रीलक्ष्मणजी ? आप उठ जाय सर्वेश्वर श्रीरामजी के कैर्कर्य में सर्वदा तत्पर रहनेवाले श्रीलक्ष्मणजी ? आपका कल्याण हो । वीर व्रती श्रीरामजी के प्राण से भी प्रिय प्रभो ? श्रीलक्ष्मण ? हे सुमित्रानन्दन ? आप जागे तथा श्रीरामजी के कैर्कर्य में सन्नद्ध हो जाय ॥५॥ अनन्त ऐश्वर्य शाली सर्वेश्वर श्रीरामजी के अनुरूप गुण विभव ऐश्वर्य आदि अनवधिकातिशय अर्थात् सर्वोत्कृष्ट परमावि से रहित उत्कृष्टवाली यानी

सर्वोत्तम ऐश्वर्यवाली तथा असंख्येय यानी अनन्त कल्याण गुण समुदायो से सम्पन्न तथा दिव्य कमलवनो मे आवासशील दिव्य कमल के समान मुखकमलवाली और दिव्य कमलदल पत्रके समान अति सुन्दर सर्वजन मोहक आग्नवाली तथा नित्य अनपायिनी अर्थात् अनश्वर सर्वदा सर्वकाल देश आदि मे एकरूपसे स्थिर रहनेवाली भगवती यानी उत्पत्ति प्रलय अगति गति विद्या अविद्या प्रभृति छ प्रकार के ऐश्वर्य से सम्पृक्त तथा निरवय यानी कर्म से होनेवाले सकोच विकार आदि सर्व दोषो से सर्वदा रहित रहनेवाली सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी से सर्वदा अभिन्न रहने वाली श्रीरामजी की दिव्य पत्नी सर्वेश्वरी श्रीसीताजी जो सम्पूर्ण जगत् की माता शरण रहित सब जीवो को अपने शरण मे रख कर सर्वदा के लिये अभय करने वाली सर्वेश्वरी श्रीसीताजी हैं उनके शरण मे अन्य शरण रहित मै जाता हूं अर्थात् अन्यशरण रहित शरणागत सब जीवो को समार भय से मुक्त कर देनेवाली सर्वेश्वरी श्रीसीताजी के शरण मे मै जाता हूं । सर्वेश्वर श्रीराम जी की आराधना करने मे मेरे जैसे अल्पज्ञ जीव की गति ही क्या अतः परम कारुणिक सर्वशरण्य श्रीरामचन्द्रजी अपने शेष स्वरूप मेरे तथा श्रीरामजी के नित्य परिचारक नित्यमुक्त सेवको के द्वारा अपना अभीष्टित सम्पादन करने के लिये या मेरे जैसे मसार चक्र मे पतित जीव का उद्धार करने के लिये स्वयं ही शुभ कार्यारम्भ कर रहे हैं । इस प्रकार ऐकान्तिक रूप से अनुमन्थान-व्यान वरके पञ्चोपनिषद् वाक्योका न्यास करे । वे इस प्रकार से हैं—

ॐ पां नमः परायपरमेष्ठ्यात्मने नमः इति शिरसि । १।

ॐ यां नमः पराय पुरुषात्मने नमः इति नासाग्रे । २।

ॐ रां नमः पराय विश्वात्मने नमः इति हृदये । ३।

ॐ वां नमः पराय निवृत्त्यात्मने नमः इति गुह्ये । ४।

ॐ लां नमः पराय सर्वात्मने नमः इति पादयोः । ५।

ॐ पा नमः पराय परमेष्ठ्यात्मने नमः इस मन्त्र को बोल कर शिर का स्पर्श करना । ॐ या नमः पराय पुरुषात्मने नमः इस मन्त्र को बोलकर नाक के अग्रभाग का स्पर्श करना । ॐ रा नमः पराय विश्वात्मने नमः इस मन्त्र को बोलकर हृदय का स्पर्श करना । ॐ वा नमः पराय निवृत्त्यात्मने नमः इस मन्त्र को बोलकर गुह्य-गुप्तांग का स्पर्श कर हाथ धोवे । ॐ ला नमः पराय सर्वात्मने नमः इस मन्त्र को बोलकर दोनों पैरो का स्पर्श करना ।

पञ्चोपनिषद् न्यासं विधाय श्रीमन्त्रराजन्यासं कुर्यात् ॐ रां ज्ञानाय हृदयाय नमः । ॐ नमः ऐश्वर्याय शिरसे स्वाहा । ॐ रामाय शक्त्यै नमः शिखायै वषट् । ॐ बलाय कवचाय हुम् । ॐ तेजसे नेत्राभ्यां वौषट् । ॐ रामाय वीर्याय—अस्त्राय फट् ।

पूर्वमे वताये अनुसार पञ्चोपनिषद् वाक्यो का न्यास करने के बाद नीचे वताये अनुसार से श्रीमन्त्रराज का न्यास करे—ॐ रा ज्ञानाय हृदयाय नमः ऐसा बोलकर हृदय प्रदेश का स्पर्श करे ॐ नमः ऐश्वर्याय शिरसे स्वाहा ऐसा बोलकर शिरका स्पर्श करे । ॐ रामाय शक्त्यै नमः शिखायै वषट् ऐसा बोलकर शिखा का स्पर्श करे । ॐ बलाय कवचाय हूं ऐसा बोलकर दोनों हाथो के मूल भाग का परस्पर मे स्पर्श करे । ॐ तेजसे नेत्राभ्यां वौषट् ऐसा बोलकर दोनों नेत्रो का स्पर्श करे । ॐ रामाय वीर्याय अस्त्राय फट् ऐसा बोलकर दक्षिण हाथ को शिर पर घूमाकर ताली बजावे ।

इति मन्त्रराजन्यासमनुष्ठाय पूर्वस्थापितस्ववामपाद्वर्त्यपूर्णकुम्भे श्रीराममन्त्रो-
च्चारणपूर्वकं तुलसीदलं निक्षिप्य श्रीमन्त्रराजेनैवाभिमन्त्र्य तज्जलेनाध्यादिपञ्चपा-
त्राणि क्रमेण षडक्षरमन्त्रोच्चारणपूर्वकं प्रपूर्य उद्वरण्याध्यादिपञ्चपात्रेभ्यः किञ्चित्कि-
ञ्चित्तोयं समुद्धृत्यपूर्णकुम्भेनिक्षिपेत् । तत उद्वरण्याध्यासलिलमादायनासाग्रपर्यन्तमु-
त्थृत्य ॐ विरजे आगच्छागच्छेति सप्तकृत्वा उक्त्वा तत्तोयेनात्मानं पूजोपकरणानि
यागभूमिं च प्रोक्ष्यावशिष्टमन्यत्र प्रक्षिपेत् ।

पूर्वोक्त रीतिसे श्रीमन्त्रराज का न्यास करने के बाद अपने वाम भाग में पहले रखे पूर्ण
कुम्भ में श्रीराममहामन्त्र का उच्चारण करते हुये तुलसी दल को डाले । पुन श्रीराममन्त्र से ही
अभिमन्त्रित करके उसी जलसे अन्योदि पञ्चपात्रों को अर्घ्यपात्र के क्रम से षडक्षर श्रीमन्त्रराज के
उच्चारण पूर्वक भरकर पुन दक्षिणावर्त शंख या आचमनी से पात्रों पात्रों से थोड़ा थोड़ा जल
निकालकर पूर्ण कुम्भ में डाल दे । इसके बाद दक्षिणावर्त शंख या आचमनी से अर्घ्य पात्र से
जल लेकर अपने नाक के आगे तक ऊपर उठाकर ॐ विरजे आगच्छ आगच्छ इस आवा
हन वाक्य को सातवार बोलकर उस जल से अपना देह सब पूजा की सामग्री यागभूमि-मन्दिर
को भी प्रक्षालन सिंचन करके अवशिष्ट जल को अन्यत्र डाल दे ।

ततस्तुलसीदल समादाय हरिः ॐ

साकेतं दिव्यलोकं सुरतरुमतुलं तत्र रत्नालिगर्भं

हैम सिंहासनं तच्छुभरुचिनिचयं भानुकोटिप्रकाशम् ।

पद्मं चानेकपत्रं कपिनिकरपति पादुके वातजातं

सुग्रीवान् द्वारपालान् नलगवयमुखान् रामभक्तान्प्रपद्ये ।

वामं पादं प्रसार्याश्रितकलुषहरं दक्षिणं कुञ्चयित्वा

जानुन्याधाय दिव्येरिपुकुलदमने बाणचापे दधत्सः ।

रामः पाणिद्वयेन प्रतिभटभयदः पद्मगभीरुणाक्षो

देवीभूषादिजुष्टो वितरतु जगतां शर्म साकेतनाथः । २ ।

इति पद्यैरित्थमनुसन्धाय श्रीसीतालक्ष्मणसमेतभगवच्छ्रीरामचन्द्रचरणारविन्दे
तत्प्रक्षिपेत् ।

अनन्तर तुलसीदल को हाथ में लेकर हरि ॐ इस प्रकार उच्चारण कर दिव्य लोक श्रीसाकेत
में स्थिर वर्णनातीत कल्पवृक्ष के नीचे रत्न समूह से खचित दिव्य सुवर्ण सिंहासन जो कि करोड़ों
सूर्य के प्रकाश से भी अधिक प्रकाश वाला तथा कल्याण प्रद और जनमन मोहक है उसके मध्य
में अनेक पत्रवाले दिव्य कमलासन में विराजमान सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी हैं जिनके चारों तरफ कपि
सेनापतियों का समूह स्थित है, तथा श्रीरामजी के चरणारविन्द की सेवा करते हुए श्रीहनुमानजी

है । सुग्रीव नल नील गवय आदि प्रवान प्रधान लोग द्वारपाल के रूप में स्थिर हैं । ऐसे श्रीराम सेवापरायण श्रीरामभक्त तथा सर्वेश्वर श्रीरामजी के शरण में मैं हूँ यानी सपरिकर श्रीरामजी को सादर प्रणाम करता हूँ ॥१॥ सम्पूर्ण ऋतुष कल्मष पाप के अपहरण करनेवाले वाम पाद को प्रसार्य-लम्बाकर लटकाकर तथैव सर्व पापताप सहारक दक्षिण पाद को मूढ़कर जानु के ऊपर रखकर विराजमान तथा दिव्य दोनों कर कमलो से शत्रुकुल का दमन यानी नाश करनेवाले दिव्य वनुष और वाण वारण किये हुए वे सर्वलोक प्रसिद्ध सर्वेश्वर श्रीरामजी जोकि कमल के बीच के भाग के समान अरुण यानी लाल आख वाले प्रतिपक्षिवीरो को भय देने वाले यानी दमन करने वाले दिव्य महिषी श्रीसीताजी तथा अनेक दिव्य आभूषणों से सुशोभित दिव्यधाम श्रीसाकेत लोक के स्वामी श्रीरामचन्द्रजी सब संसार को कल्याण प्रदान करें ॥२॥ इत्यादि पद्यों से ऊपर वर्णित रूप से व्यान करके सर्वेश्वरी श्रीसीताजी श्रीलक्ष्मणजी के सहित सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी के चरणारविन्दों में हाथ में ली हुई तुलसी आसन के रूप में समर्पण करें ।

अथैवमामनं कल्पयित्वा ओमाधारशक्त्यै नमः इति आधार शक्त्यै अर्ध्यादीनि समर्पयामि । ओ प्रकृत्यै नमः इति प्रकृत्यै अर्ध्यादीनि समर्पयामि । ओमखिलजगदाधाराय कूर्मरूपिणे नारायणाय नमः इति तस्मै अ० । ओ भगवतेऽनन्ताय नागराजाय नमः इति तस्मै अ० । ॐ भूम्यै नमः इति तस्मै अ० । ॐ श्रीसाकेताय दिव्य नगराय नमः इति तस्मै अ० । ॐ पुष्पकाय दिव्यविमानाय नमः इति तस्मै अ० । ॐ श्रीसाकेताय दिव्यजनपदाय नमः अ० । ॐ आनन्दयायमदिव्यरत्नमण्डपाय नमः अ० । ॐ आस्तरणभूताय अनन्ताय नमः अ० ।

पूर्वोक्त क्रम से आमन की कल्पना करके निम्नप्रकार से आवार शक्ति आदि की पूजा करें—
ॐ आधार शक्त्यै नम अर्ध्या दीनि समर्पयामि इस मन्त्र को बोलकर आधार शक्ति की पाद्य अर्घ्य आचमनीय आदि षोडशोपचार या यथा मिलितोपचार यानी षोडश पदार्थों से या जितने पदार्थ की शक्यता हो उतने ही पूजा की सामग्री से पूजा करें । अर्ध्यादि में आदि शब्द से अन्य पूजा द्रव्यों का ग्रहण करना चाहिये जो देश काल तथा शक्ति के अनुसार जुटाई गई हो ।
ॐ प्रकृत्यै नम इति प्रकृत्यै अर्ध्यादीनि समर्पयादि ऐसा बोलकर यथोपचार सामग्री से प्रकृति की पूजा करें । तथैव ॐ अखिल जगदाधाराय कूर्मरूपिणे नारायणाय नम ऐसा बोलकर निखिल ब्रह्माण्ड के आधार भूत कूर्मजी की पूजा करें । ॐ भगवते अनन्ताय नारायणाय नम इस प्रकार बोलकर सर्वोपचार से नागराज की पूजा करें । ॐ भूम्यै नम ऐसा बोलकर सर्वोपचार द्रव्य से भूमिकी पूजा करें । ॐ श्री साकेताय दिव्य नगराय नम ऐसा बोलकर सर्वोपचार द्रव्य से सर्वापेक्षयोपर रूप से स्थित दिव्य वाम श्रीसाकेत की पूजा करें । ॐ पुष्पकाय दिव्यविमानाय नम ऐसा बोलकर सर्वोपचार द्रव्यों से दिव्य पुष्पक विमान की पूजा करें । ॐ श्रीसाकेताय दिव्य जनपदाय नम ऐसा बोलकर सर्वोपचार द्रव्यों से श्रीसाकेत नामक दिव्यजनपद की पूजा करें । ॐ आनन्दमयाय दिव्यरत्नमण्डपाय नम ऐसा बोलकर सर्वोपचार द्रव्य से आनन्दस्वरूप दिव्यरत्नमण्डप की पूजा करें । ॐ आस्तरणभूताय अनन्ताय नम ऐसा बोलकर सर्वोपचार द्रव्यों से आस्तर स्वरूप यानी ऊपर का विछौनाके रूपमें अनन्त की पूजा करें । इसके बाद—

आग्नेय्यां दिशि ॐ धर्माय पीठपादाय नमः अ० । नैऋत्या ॐ ज्ञानाय पीठपादाय नमः अ० । वायव्या ॐ वैराग्याय पीठपादाय नमः अ० । ऐशान्या ॐ ऐश्वर्याय पीठपादाय नमः अ० । मध्ये ॐ पीठभूताय अनन्ताय नागराजाय नमः अ० । प्राच्यां ॐ अधर्माय पीठगात्राय नमः अ० । दक्षिणस्या ॐ अज्ञानाय पीठगात्राय नमः अ० । पश्चिमायां ॐ अवैराग्याय पीठगात्राय नमः अ० । उत्तरस्या ॐ अनैश्वर्याय पीठगात्राय नमः अ० ।

ॐ धर्माय पीठपादाय नमः इस मन्त्र को बोलकर प्रथम सिंहासन के आग्नि कोण की अर्घ्य आदि सर्वोपचार से पूजा करे । ॐ ज्ञानाय पीठपादाय नमः ऐसा बोलकर नैऋत्य कोण की पूजा करे । ॐ वैराग्याय पीठपादाय नमः ऐसा बोलकर वायव्य कोण की पूजा करे । ॐ ऐश्वर्याय पीठपादाय नमः ऐसा बोलकर ईशान कोण की पूजा करे । ॐ पीठभूताय अनन्ताय नागराजाय नमः ऐसा बोलकर मध्यभाग की पूजा करे । ॐ अधर्माय पीठगात्राय नमः ऐसा बोलकर सिंहासन के पूर्वभाग की पूजा करे । ॐ अज्ञानाय पीठगात्राय नमः ऐसा बोलकर दक्षिण भाग की पूजा करे । ॐ अवैराग्याय पीठगात्राय नमः ऐसा बोलकर पश्चिम दिशा की पूजा करे । ॐ अनैश्वर्याय पीठगात्राय नमः ऐसा बोलकर उत्तर दिशा की पूजा करे ।

एभिः परिच्छिन्नतत्त्वसदसदात्मकाय नमः अ० । ॐ ऋग्वेदाय पीठवाहकाय नमः अ० । ॐ यजुर्वेदाय पीठवाहकाय नमः अ० । ॐ सामवेदाय पीठवाहकाय नमः अ० । ॐ अथर्ववेदाय पीठवाहकाय नमः अ० । इत्थं गन्धपुष्पादिभिस्तान्भ्यर्च्य प्रणमेत् ।

ॐ एभिः परिच्छिन्नतत्त्वसदसदात्मकाय नमः ऐसा बोलकर अयम अज्ञान अवैराग्य तथा अनैश्वर्य रूपमात्र से मुक्त कार्य तथा कारणस्वरूप पीठतत्त्व की सर्वोपचार से पूजा करे । पुनः ॐ ऋग्वेदाय पीठवाहकाय नमः ऐसा बोलकर पूर्वदिशा में ऋग्वेद की पूजा करे । ॐ यजुर्वेदाय पीठवाहकाय नमः ऐसा बोलकर दक्षिण दिशा में यजुर्वेद की पूजा करे । ॐ सामवेदाय पीठवाहकाय नमः ऐसा बोलकर पश्चिम दिशा में सामवेद की पूजा करे । ॐ अथर्ववेदाय पीठवाहकाय नमः ऐसा बोलकर उत्तर दिशा में अथर्ववेद की पूजा करे । ऊपर बताए अनुसार गन्ध पुष्प अक्षत आदि यथोचित पूजा सामग्री से भगवान के सिंहासन के वहन करने वाले वाहक रूप चारों वेदों की पूजा कर प्रणाम करे ।

अथ पीठवाहकोपरि ॐ परिच्छिन्नतत्त्वसदसदात्मकायानन्ताय नागराजाय नमः इति तस्मै अ० । तत्रानन्तोपरि ॐ अष्टदल पद्माय नमः इति तस्मै अ० । तद्वलेषु ॐ सं सूर्याय नमः अ० । केशरेषु ॐ सं सोममण्डलाय नमः अ० । कर्णिकायाम् ॐ र वह्निमण्डलाय नमः अ० ।

पूर्व में बताये अनुसार वेदों की पूजा करने के बाद ॐ परिच्छिन्नतत्त्वसदसदात्मकायानन्ताय नागराजाय नमः ऐसा बोलकर पीठवाहक चारों वेदों के ऊपर पीठस्वरूप शेष

की सर्वोपचार द्रव्यों से पूजा करे । पुन अनन्त के ऊपर मे ॐ अष्टदल पद्माय नम ऐसा बोलकर अष्टदल कमल की पूजा करे । ॐ स सूर्याय नम ऐसा बोलकर अष्टदल कमल के दलों-पत्तों पर सूर्य मण्डल की पूजा करे । ॐ स सोममण्डलाय नम ऐसा बोलकर कमल के केसरों मे चन्द्रमण्डल की पूजा करे । ॐ र वह्निमण्डलाय नम ऐसा बोलकर अष्टदलकमल के कर्णिका मे अग्नि मण्डल की पूजा करे ।

इति मण्डलत्रयं ध्यात्वा पद्मस्य पूर्वपाद्दले ॐ विमलायै चामरहस्तायै नमः
इति तस्यै अ० । पद्मस्याग्निकोणे ॐ उत्कर्षिण्यै चामरहस्तायै नमः इति अ० । पद्मस्य
दक्षिणदले ॐ ज्ञानरूपायै चामरहस्तायै नमः अ० । पद्मस्य नैऋत्यदले ॐ क्रियायै
चामरहस्तायै नमः अ० । पद्मस्य पश्चिमदले ॐ योगायै चामरहस्तायै नमः अ० ।
पद्मस्य वायव्यदले ॐ सत्यायै चामरहस्तायै नमः अ० । पद्मस्योत्तरदले ॐ प्रवृह्यै
चामरहस्तायै नमः अ० । पद्मस्यैशानदले ॐ ऐशानायै चामरहस्तायै नमः अ० ।

पूर्वोक्त प्रकार से अष्टदल कमल मे तीनो मण्डल का शान्तचित्त से ध्यानकर यथोपचार पूजा करके ॐ विमलायै चामरहस्तायै नम इस मन्त्रको बोलकर कमल के पूर्वभाग के दल मे हाथ मे चंवर ली हुई विमलाजी की अर्घ्यादि से पूजा करे । तथैव ॐ उत्कर्षिण्यै चामरहस्तायै नम को बोलकर कमल के अग्नि कोण के दल मे चवर हस्ता उत्कर्षिणी की अर्घ्यादि से पूजा करे । ॐ ज्ञानरूपायै चामरहस्तायै नम ऐसा बोलकर कमल के दक्षिणदल मे चंवर ली हुई ज्ञानरूपा की अर्घ्यादि से पूजा करे । ॐ क्रियायै चामरहस्तायै नम ऐसा बोलकर कमल के नैऋत्यकोण के दल मे हाथ मे चंवर ली हुई क्रिया शक्ति की अर्घ्यादि से पूजा करे । ॐ योगायै चामरहस्तायै नम ऐसा बोलकर कमल के पश्चिम दल मे हाथ मे चंवर ली हुई योगशक्ति की अर्घ्यादि से पूजा करे । ॐ सत्यायै चामरहस्तायै नम ऐसा बोलकर कमल के वायव्यकोणवाले दल मे हाथ मे चवर ली हुई सत्यास्वरूपा शक्ति की अर्घ्यादि से पूजा करे । ॐ प्रवृह्यै चामर हस्तायै नम ऐसा बोलकर कमल के उत्तर तरफ के दल मे हाथ मे चवर ली हुई प्रवृह्य नामक शक्ति की अर्घ्यादि से पूजा करे । ॐ ऐशानायै चामरहस्तायै नम ऐसा बोलकर कमल के ईशान वाले दल मे हाथ मे चवर ली हुई ऐशानी रूपा शक्ति की अर्घ्यादि से पूजा करे । अनन्तर—

भगवतोऽग्रे कर्णिकायाः पूर्वभागे ॐ अनुग्रहायै नमः अ० । पद्मस्य कर्णि-
कायां ॐ जगत्प्रकृतये दिव्ययोगपीठवाहकाय नमः अ० । दिव्ययोगपीठवाहकोपरि
ॐ दिव्ययोगपीठाय नमः अ० । योगपीठे ॐ दिव्ययोगपर्यङ्काय नमः अ० ।
पर्यङ्कोपरि ॐ सहस्रफणाशोभिताय नागराजाय नमः अ० । पुरो ॐ भगवत्पादपीठाय
नमः अ० । तदुपरि ॐ भगवत्पादुकाभ्यां नमः अ० ।

ॐ अनुग्रहायै नम इस मन्त्र को बोलकर भगवान् श्रीरामजी के आगे अष्टदल कमल की कर्णिका के पूर्वदिशा में अनुग्रहा रूपा शक्ति की अर्घ्य आदि सर्वोपचार द्रव्यों से पूजा करे । ॐ जगत्प्रकृतये दिव्ययोगपीठवाहकाय नम ऐसा बोलकर अष्टदल कमल के कर्णिका मे दिव्ययोग-पीठ वाहक की अर्घ्य आदि से पूजा करे । ॐ दिव्ययोगपीठाय नम ऐसा बोलकर दिव्ययोग

पीठवाहक के ऊपर दिव्ययोग पीठकी अर्घ्य आदि से पूजा करे। ॐ दिव्ययोगपर्यङ्काय नमः ऐसा बोलकर योगपीठ पर दिव्ययोग पर्यङ्क की अर्घ्य आदि से पूजा करे। ॐ सहस्रफगाशोभिताय नागराजाय नमः ऐसा बोलकर पर्यङ्क के ऊपर सहस्र फग से शोभित नागराज की अर्घ्य आदि से पूजा करे। ॐ भगवत्पाद पीठाय नमः ऐसा बोलकर भगवान् के सामने भगवान् के पादुका पीठ की अर्घ्य आदि से पूजा करे। ॐ भगवत्पादुकाभ्या नमः ऐसा बोलकर पादुका पीठ के ऊपर भगवान् के दिव्य पादुका खड़ाव की अर्घ्य आदि से पूजा करे।

अथ तादृशाष्टदलपद्मस्थपर्यङ्कस्थितानन्तोपरि—

प्रपन्नाभीष्टसंदोहश्रीराम ? करुणानिधे ?।

शिवशेषाद्यविज्ञेयाशेषमाहात्म्य राघव ? ।१।

तादृश्या सीतयाऽऽगच्छ लक्ष्मणेन सह प्रभो ? ।

आज्ञां क्रियस्व दासस्य प्रपन्नस्यार्चनाय मे ।२।

इति श्रीसीतालक्ष्मणसहितमप्रमेयकृपारत्नाकर भगवन्तं साङ्गं सोयुधं सपरिवारं सवाहनं स्वशक्तियुक्त श्री रामचन्द्रमावाह्य पुष्पाञ्जलि च तस्मै प्रदाय पूर्वस्थापितार्घ्यपात्रादुद्धरण्यार्घ्यजलमादाय ॐ श्रीसीतालक्ष्मणसमेतायाप्रमेयकृपा रत्नाकराय भगवते श्रीरामचन्द्राय नमः, मध्ये 'रां रामाय नमः' वामे 'श्रीसीतायै स्वाहा' दक्षिणे 'लं लक्ष्मणाय नमः' इति तत्तन्मन्त्रैः पृथक् पृथग्वा अर्घ्यं समर्पयामी त्युक्त्वा भगवतो दक्षिणहस्त प्रोक्षन्निव विभाव्य तज्जलं पतनपात्रे प्रक्षिपेत् ।

पूर्व कथित विधान से भगवान् के पादुकान्त पूजा होजाने के बाद पहले वर्णित अष्टदल कमल में स्थित अनन्त के ऊपर निम्न रूप से सपरिकर सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी का आवाहन करे शरण मे आये हुये सभी जनो के इच्छित पदार्थ को देने वाले हे करुणा के खजाने सर्वेश्वर श्रीरामजी ? शिव शेषनाग सर्वदेव समूह सरस्वती प्रभृति से सर्व प्रयत्न करने पर भी आप का सम्पूर्ण माहत्म्य नहीं जाना जा सका ऐसे अनन्त माहत्म्य शाली रघुकुल श्रेष्ठ हे श्रीराघवजी ? सर्वसमर्थ प्रभु श्रीरामजी ? आप से अभिन्न स्वरूपा नित्य सहचरी सर्वेश्वरी श्रीसीताजी तथा सर्व जगत् के आधार श्रीलक्ष्मणजी के साथ पधारे तथा आपके शरण मे आये आपका नित्य किकर मुझे आपकी पूजा करने के लिये आज्ञा प्रदान करे । इस प्रकार प्रार्थना पूर्वक सर्वेश्वरी श्रीसीताजी तथा श्रीलक्ष्मणजी के साथ अप्रमेय अमित कृपा के समुद्र सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी को आयुध-दिव्यास्त्र धनुष बाणादि सपरिवार वाहन अनन्तानन्त अपनी शक्तियों के साथ श्रीरामचन्द्रजी को आवाहन करके पुष्पाञ्जलि श्रीचरणो मे समर्पण करके पहले से स्थापित अर्घ्यपात्र से दक्षिणावर्तशंख या आचमनी से अर्घ्य जल लेकर-ॐ श्रीसीता लक्ष्मण समेताया प्रमेय कृपा रत्नाकराय भगवते श्रीरामचन्द्राय नमः इस मन्त्र को बोलकर श्रीरामजी का दाहिना हाथ प्रक्षालन की भावना से अर्घ्य समर्पयामि ऐसा कहते हुये हाथ मे लिया अर्घ्य जल पतनपात्र योनी तरभाणी मे गिरादे । अनन्तर पाद्य आदि यथा मिलित पूजा द्रव्यों का नाम लेकर सभी वस्तुओं से पूर्व क्रम से ही पूजा करे । अथवा दिव्यासन के मध्यभाग में-रा रामाय नमः, इस

महामन्त्र से सर्वेश्वर श्रीरामजी का सर्वोपचारो से पूजा करे । तथैव श्रीरामजी के वामभाग मे 'श्री सीतायै स्वाहा' इस मन्त्र से श्रीसीताजी की आवाहन तथा पूजा करे । श्रीसीताजी तथा श्री रामजी के आसन से किञ्चित् न्यून नीचे श्रीरामजी के दक्षिण भाग मे 'लक्ष्मणाय नमः' इस मन्त्र से श्रीलक्ष्मणजी का आवाहन कर पूजा करे । यहा यह खयाल मे रखना चाहिने कि यदि आचमनी एक ही हो तो उसे शुद्ध जल से प्रक्षालन धोकरही अर्घ्यपात्र से पाद्यपात्र मे तथा पाद्यपात्र से आचमन पात्र मे डालना चाहिये । अलग अलग पात्रो के लिये अलग अलग आचमनी की व्यवस्था हो तो अति उत्तम ।

तत उद्धरणीं शुद्धजलपात्रजलेन संप्रक्षाल्य ततस्तथा पाद्यजलपात्रात् पाद्यजलमादाय तदेव वाक्यं समुच्चार्य पाद्यं समर्पयामीति वदन् भगवतः पादौ प्रक्षाल्येव विभाव्य तज्जलं पतनपात्रे द्विः प्रक्षिपेत् । शुद्धजलपात्रस्थजलेनोद्धरणीं प्रक्षाल्य आचमन पात्रा-
त्तज्जलमादाय तदेव वाक्यं समुच्चार्य आचमनं तस्मै समर्पयामीति वदन् भगवतो मुखकमलसमीपे प्रदर्श्य तज्जलं पतनपात्रे त्रिः प्रक्षिपेत् ।

पुन शुद्धजल पात्र के जल से आचमनी को प्रक्षालन कर के आचमनी से पाद्य जलपात्र से पाद्यजल लेकर ॐ श्रीसीता लक्ष्मण सहितायाऽप्रमेय कृपारत्नाकराय भगवते श्रीरामचन्द्राय नमः इस प्रकार बोलकर या पूर्वोक्त क्रमसे श्रीरामजी श्रीसीताजी तथा श्रीलक्ष्मणजी को अलग अलग उन उन मन्त्रो का उच्चारण करते हुये भगवान के श्रीचरण कमलो को प्रक्षालन की भावना करके पाद्यं समर्पयामि बोलकर श्रीचरणो मे दृष्टि रखकर पतन पात्र मे दो बार उस जल को गिरादे । फिर शुद्ध जलपात्र के जल से आचमनी को प्रक्षालन करके आचमनी मे आचमन पात्र से जल लेकर ॐ श्रीसीता लक्ष्मण सहितायाऽप्रमेयकृपारत्नाकराय भगवते श्रीरामचन्द्राय नमः इस प्रकार बोलकर श्रीमुखारविन्द के समक्ष दृष्टि करके आचमनीय जल को भी श्रीमुखकमल के समक्ष करके मै भगवान को आचमन करा रहा हूँ ऐसी भावनाकर "आचमनीयं समर्पयामि" ऐसा बोलते हुए आचमनीय जल को पतन पात्र मे तीन बार गिरादे ।

उद्धरणीं पूर्ववदेव प्रक्षाल्य शुभ्रवस्त्रेण हस्तकमलमुख कमलसंमृज्य, शाटिकोच-
राग्रेण पदौ च प्रत्येकं संमृज्य, षोडशोपचारान् समर्पयामीति पुष्पाञ्जलि प्रदाय,
उद्धरण्या पूर्णकुम्भात्सलिलमुत्प्लक्ष्यक्षीरकलगुडपूर्वध्यात्वा तदेव वाक्यं समुच्चार्य मधु-
पर्कं समर्पयामीति वदन् निवेद्य पतनपात्रे प्रक्षिप्य पूर्ववदुद्धरणीं प्रक्षाल्य पूर्ववदेवाचमनं
प्रदाय शाब्द्या पूर्ववत्संमृज्य स्नानार्थं पादुके समर्पयामीति पुष्पाञ्जलिं भगवते प्रदाय
पूर्ववदेवचाध्याद्युपचारान् प्रदाय स्नानशाटी मनसाध्यात्वा तुलसीकाष्ठेन तद्वाक्यो-
च्चारणपूर्वकं दन्तधावनमाचरन्निव विभाव्य स्पृहस्तं प्रक्षाल्य शुद्धजलपात्रतोयेन मन्त्रो-
च्चारणपूर्वकं गण्डूवं समर्पयामीति तज्जलं षट्कृत्यः पतनपात्रे प्रक्षिप्य पुनरपि तज्ज-
लेनमुखशोधनं समर्पयामीति मुखाम्बुजशोधनमाचरन्निव विभाव्य तज्जलं पतनपात्रे
प्रक्षिप्य पूर्ववत्पाद्याचमने प्रदाय ताम्बूलं च प्रदाय अभ्यङ्गोद्वर्तनचूर्णं प्रदाय अभ्य-

ङ्गस्नानमाचरन्निव विभाव्यस्नानपात्रं मूर्ध्नि निधाय स्नानीयपात्रजलेन पुरुष-
सूक्तादिकमनुसंधत् भगवन्तं स्नापयित्वा स्नानशास्त्रा समृज्य सिंहासने स्थापयित्वा
तद्वाक्येनैव गन्धपुष्पधूपदीपादिकं समर्पयामीति वदन् गन्धादिकं भगवते समर्पयेत् ।

अनन्तर पहले के समान ही आचमनी को शुद्धजल से प्रक्षालन कर स्वच्छ स्फेद वस्त्र के एक भाग से भगवान के हस्तकमल तथा मुखकमल पोछने की भावना करते हुये मुखारविन्द तथा हस्तकमलों के समक्ष में समुपस्थापित करे वस्त्र के अन्य भाग से श्रीचरणकमलों की पोछने की भावना से श्रीचरणकमल के समक्ष समुपस्थापित करे । पुन हाथ में तुलसी तथा पुष्पो को लेकर—ॐ श्रीसीतालक्ष्मण सहितायाप्रमेय कृपारत्नाकराय भगवते श्रीरामचन्द्राय नमः इस मन्त्र को बोलकर षोडशोपचारान् समर्पयामि ऐसा बोलकर षोडशोपचार की भावना से श्रीचरणकमलों में पुष्पाञ्जलि समर्पण कर दे । अनन्तर आचमनी से पूर्णकुम्भ से शुद्ध जल लेकर दृढ फल तथा गुड से पूर्ण है ऐसा ध्यान करके ॐ श्रीसीतालक्ष्मणसहितायाप्रमेयकृपा रत्नाकराय भगवते श्री रामाय नमः इस को बोलकर मधुपर्क समर्पयामि ऐसा बोलकर पतन पात्र में गिरा दे, पुन आचमनी को प्रक्षालन कर पूर्वके समान ही भगवान को आचमन कराकर पहले के समान ही शुभ्रवस्त्र से हस्तकमल तथा मुखकमल और चरण कमलों को पोछने की भावना कर वस्त्र को भगवान् के समुख करे । अनन्तर हाथ में पुष्प लेकर भगवान के स्नान के लिये पादुका का समर्पण करता हूँ ऐसी भावना कर भगवान के श्रीचरणों में पुष्पाञ्जलि समर्पण करे तब पूर्वके समान ही अर्घ्य पाद्य समर्पण कर आचमन कराके स्नानार्थ शाटिका-पीताम्बर का मन से ही ध्यान कर पूर्व के समान ही मन्त्र का उच्चारण करके दन्त धावनं समर्पयामि ऐसा बोलकर तुलसी काष्ठ से भगवान को दन्तधावन करा रहे हो ऐसी भावना करके उस काष्ठ को पतनपात्र में रखकर अपने हाथ को धोकर शुद्ध जलमात्र से आचमनी से जल लेकर पूर्व के समान मन्त्र को बोलकर गण्डूषं समर्पयामि ऐसा बोलकर जल को छ बार पतनपात्र में गिरा दे । पुन आचमनी से शुद्ध जल लेकर पूर्व के समान ही मन्त्र को बोलकर मुखगोधनं समर्पयामि ऐसा बोलकर शुद्ध जल से मुखारविन्द प्रक्षालन की भावना कर उस जल को पतनपात्र में गिरा दे । पुन अर्घ्यपाद्य आचमन कराने के बाद पूर्वके समान ही मन्त्र को पढ़कर ताम्बूलं समर्पयामि ऐसा बोलकर ताम्बूल समर्पण करने के बाद अभ्यङ्ग स्नान के लिये तेल तथा उवटन आदि हाथ में लेकर यह मानसिक भावना करे कि श्रीभगवान् के दिव्य शरीर में मैं सुगन्धित द्रव्यादि लगा रहा हूँ । इसके बाद अभ्यङ्ग स्नान सम्पादन करने की भावना से स्नान पात्र को मस्तक में स्थापित कर उस शुद्ध जल से हरि ॐ सहस्रशीर्षा पुरुष इत्यादि पुरुष सूक्त के मन्त्रों को पढ़ते हुए भगवान् को स्नान कराकर स्नान शाटिका-शुद्धशुभ्रवस्त्र से अच्छी तरह से पोछकर सिंहासन में विराजमान करा दे । अनन्तर ॐ श्रीसीता लक्ष्मण सहितायाप्रमेय कृपा रत्नाकराय भगवते श्रीरामचन्द्राय नमः इस मन्त्र को बोलकर गन्धं समर्पयामि इस प्रकार बोलकर गन्ध का समर्पण करे । तथैव पुष्प समर्पयामि बोलते हुए पुष्प तथा धूप-दीप नैवेद्य-ताम्बूल-एला-लवङ्ग-सुगन्धद्रव्य आदि नामों को अलग-अलग बोलकर यथामिलित सभी द्रव्य भगवान् को सादर समर्पण करे ।

ततः पात्रावशिष्टजलेन श्री श्रियै नमः ली लीलायै नमः भूँ भूम्यै नमः इति मन्त्रोच्चारणेनाध्यादिकं प्रदाय ततः ॐ किरीटाय मुकुटाधिपतये नमः ॐ । ॐ

दक्षिणकुण्डलाय मकरात्मने नमः अ० । ॐ वामकुण्डलाय मकरात्मने नमः अ० ।
 ॐ वैजयन्तीमायायै श्रीतुलस्यै नमः अ० । ॐ श्री वत्साय श्रीनिवासाय नमः अ० ।
 ॐ कौस्तुभायरत्नाधिपतये नमः अ० । ॐ काञ्चीगुणोज्ज्वलाय दिव्यपीताम्बराय
 नमः अ० । ॐ सर्वेभ्यो भगवद्दिव्यविभूषणेभ्यो नमः अ० । इति भगवद्भूषणानि
 अर्घ्यादिभिरभ्यर्चेत् ।

पूर्वोक्त प्रकार से भगवान की पूजा सम्पादन करने के बाद अर्घ्यादिपात्रों में वचे हुये जल से श्री श्रियै नम इस मन्त्र को बोलकर श्रीदेवी की अर्घ्य आदि सभी पदार्थों से पूजा करे । तथैव ली लीलायै नम इस मन्त्र को बोलकर लीलादेवी की और भू भूम्यै नम इस मन्त्र को बोल कर भूदेवी की सभी अर्घ्यादि सामग्री से पूजा करे । पुन ॐ त्रिरीटाय मुकुटाधिपतये नम इस मन्त्र को बोलकर अर्घ्य पाद्य आचमनीय स्नानीय गन्ध पुष्प आदि से त्रिरीट मुकुट की पूजा करने के बाद ॐ दक्षिण कुण्डलाय मकरात्मने नम इस मन्त्र को बोलकर पहले के समान ही अर्घ्यादि सामग्री से दक्षिण कुण्डल की पूजा करके ॐ वामकुण्डलाय मकरात्मने नम इस मन्त्र को बोलकर पूर्व के ही तरहसे वाम कुण्डल की पूजा करे । तब ॐ वैजयन्तीमाल्यै श्रीतुलस्यै नम इस मन्त्र को बोल कर अर्घ्यादि सभी वस्तुओं से वैजयन्ती माला की पूजा करनेके बाद ॐ श्रीवत्साय श्रीनिवासाय नम इस मन्त्र को बोलकर पूर्व के समान ही सभी अर्घ्यादि से श्रीरामचन्द्रजी के वक्षस्थल में स्थित सर्वेश्वरी श्रीसीताजी के निवास स्थान भूत श्रीवत्स की पूजा करे । इसके बाद ॐ कौस्तुभाय रत्नाधिपतये नम इस मन्त्र को बोलकर पहले के समान ही अर्घ्यादि समस्त सामग्री से श्रीरामजी का भूषण कौस्तुभमणि की पूजा सम्पादन करे । अनन्तर ॐ काञ्चीगुणोज्ज्वलाय दिव्यपीताम्बराय नम इस मन्त्र को बोलकर पूर्व के ही समान अर्घ्यादि सभी वस्तुओं से श्रीरामजी के दिव्य परिधान पीताम्बर की पूजा करे । इसके बाद ॐ सर्वेभ्यो भगवद्दिव्यविभूषणेभ्यो नम इस मन्त्र को बोलकर पूर्व के ही तरह से समस्त अर्घ्यादि द्रव्यों से श्रीराम चन्द्रजी के समस्त दिव्य आभूषणों की एक ही साथ में पूजा करे ।

ततोऽर्घ्याद्यैकैकपात्रस्थ जलेन क्रमशः ॐ सुदर्शनाय हेतिराजाय नमः अ० ।
 ॐ पाञ्चजन्याय शङ्खाधिपतये नमः अ० । ॐ कौमोदक्यै गदाधिपतये नमः अ० ।
 ॐ नन्दकाय खड्गाधिपतये नमः अ० । ॐ शार्ङ्गाय चापाधिपतये नमः अ० ।
 इति भगवतो दिव्यायुधानि अर्घ्यादिभिरभ्यर्चेत् ।

पूर्वोक्त क्रम से भगवान् के दिव्य भूषणों के पूजन करने के बाद उन्हीं अर्घ्य आदि पात्रों के जलसे ॐ सुदर्शनाय हेतिराजाय नम इस मन्त्र को बोलकर अर्घ्य पाद्य आदि सभी सामग्री से भगवान् के दिव्य आयुध सुदर्शन चक्र की पूजा करे । इसी प्रकार से ॐ पाञ्चजन्याय शङ्खाधिपतये नम इस मन्त्र को बोलकर अर्घ्यादि से पाञ्चजन्य शंख की पूजा करे । पुन ॐ कौमोदक्यै गदाधिपतये नम इस मन्त्र को बोलकर अर्घ्यादि से गदा की पूजा करने के बाद ॐ नन्दकाय खड्गाधिपतये नम इस मन्त्र को बोलकर खड्ग की अर्घ्यादि से पूजा करे पुन ॐ शार्ङ्गाय चापाधिपतये नम इस मन्त्र को बोलकर भगवान् के दिव्य आयुध धनुषबाण की अर्घ्यादि से पूजा करे ।

ततस्तथैव ॐ अं अनन्ताय नमः अ० । ॐ गं गरुडाय नमः अ० । ॐ विं विष्वक्सेनाय नमः अ० । ॐ गं गजाननाय नमः अ० । ॐ जं जयत्सेनाय नमः अ० । ॐ हं हरिवक्त्राय नमः अ० । ॐ कं कालप्रकृत्यै सञ्ज्ञिकायै नमः अ० । ॐ सर्वेभ्यो भगवत्परिजनपरिचरश्रीसुग्रीवाङ्गदविभीषणजाम्बवन्तनलनीलसुषेणगजगवयप्रभृतिभ्यो नमः अ० । इति भगवत्परिजनानर्घ्यादिभिरभ्यर्चेत् ।

भगवान् के दिव्यायुधो के पूजन के बाद पूर्व में बताये क्रम से ही ॐ अ अनन्ताय नमः इस मन्त्र को बोलकर अनन्त की अर्घ्यादि से पूजा करे । पुन ॐ ग गरुडाय नमः इस मन्त्र को बोलकर अर्घ्यादि से गरुडजी की पूजा करे तथा ॐ वि विष्वक्सेनाय नमः इस मन्त्र को बोलकर विष्वक्सेन की पूजा करे । और ॐ गं गजाननाय नमः इस मन्त्र को बोलकर गजानन की अर्घ्यादि से पूजा करे । तब ॐ ज जयत्सेनाय नमः इस मन्त्र को बोलकर अर्घ्यादि से जयत्सेन की पूजा करे । बाद में ॐ हं हरिवक्त्राय नमः इस मन्त्र को बोलकर हरिवक्त्र की अर्घ्यादि से पूजा करे । अनन्तर में ॐ कं काल प्रकृत्यै सञ्ज्ञिकायै नमः इस मन्त्र को बोलकर अर्घ्यादि से कालप्रकृति की पूजा करने के बाद ॐ सर्वेभ्यो भगवत्परिजनपरिचरश्रीसुग्रीवाङ्गदविभीषणजाम्बवन्तनलनीलसुषेणगजगवयप्रभृतिभ्यो नमः इस मन्त्र को बोलकर भगवान् के सभी परिजन परिचर श्रीसुग्रीव श्रीअङ्गद श्रीविभीषण श्रीजाम्बवन्त श्रीनलनील सुषेण गजगवय आदि को अर्घ्यादि से पूजा करे ।

ततस्तथैव भगवतः पूर्वे ॐ ऋक्षराजाय नमः अ० । ॐ नीलाय नमः अ० । दक्षिणे ॐ सुग्रीवाय नमः अ० । ॐ नलाय नमः अ० । पश्चिमे ॐ शत्रुघ्नाय नमः अ० । ॐ अंगदाय नमः अ० । उत्तरे ॐ भरताय नमः अ० । ॐ विभीषणाय नमः अ० । भगवतोऽग्रे ॐ आज्ञनेयाय महाबलाय हुं हनुमते नमः अ० । ॐ सर्वेभ्यो भगवद् द्वारपालेभ्यो नमः अ० । इति भगवतो द्वारपालानर्घ्यादिभिरभ्यर्चेत् ।

पूर्वोक्त क्रम से परिजनादि की पूजा के बाद उसी प्रकार से भगवान् के द्वारपालों की पूर्वादि क्रम से पूजा करे ॐ ऋक्षराजाय नमः इस मन्त्र को बोलकर भगवदपेक्षया पूर्वदिशामें अर्घ्यादि से श्रीऋक्षराजजी की पूजा कर तथैव ॐ नीलाय नमः इस को बोलकर अर्घ्यादि से श्रीनीलजी की पूजा करे । पुन ॐ सुग्रीवाय नमः इस मन्त्र को बोलकर दक्षिणदिशा में अर्घ्यादि से श्रीसुग्रीवजी की पूजा करके ॐ नलाय नमः इस मन्त्र को बोलकर अर्घ्यादि से श्रीनलजी की पूजा करे फिर ॐ शत्रुघ्नाय नमः इस मन्त्र को बोलकर पश्चिमभाग में अर्घ्यादि से श्रीशत्रुघ्नजी की पूजा कर ॐ अंगदाय नमः इस मन्त्र को बोलकर अर्घ्यादि से श्रीअंगदजी की पूजा करे । पुन ॐ भरताय नमः इस मन्त्र को बोलकर उत्तरदिशा में श्रीभरतजी की अर्घ्यादि से पूजा कर ॐ विभीषणाय नमः इस मन्त्र को बोलकर अर्घ्यादि से श्रीविभीषणजी की पूजा करे । अनन्तर भगवान् के आगे ॐ आज्ञनेयाय महाबलाय हुं हनुमते नमः इस मन्त्र को बोलकर अर्घ्यादि से श्री हनुमानजी की पूजा के बाद ॐ सर्वेभ्यो भगवद् द्वारपालेभ्यो नमः इस मन्त्र को बोलकर भगवान् के सभी द्वारपालों की अर्घ्यादि से पूजा करे ।

ततस्तथैव ॐ विघ्नेशाय नमः अ० । ॐ वाण्यै नमः अ० । ॐ दुर्गायै नमः अ० । ॐ क्षेत्रपालाय नमः अ० । ॐ सूर्याय नमः अ० । ॐ चन्द्राय नमः अ० । ॐ नारायणाय नमः अ० । ॐ नारसिंहाय नमः अ० । ॐ वासुदेवाय नमः अ० । ॐ वाराहाय नमः अ० । इत्यङ्गदेवान् सम्पूज्य ॐ श्रीसीतायै नमः अ० । ॐ श्रीलक्ष्मणाय नमः अ० । ॐ श्रीहनुमते नमः अ० । ॐ श्रीभरताय नमः अ० । ॐ श्रीशत्रुघ्नाय नमः अ० । ॐ श्रीविभीषणाय नमः अ० । ॐ श्रीसुग्रीवाय नमः अ० । ॐ श्रीअङ्गदाय नमः अ० । ॐ श्रीजाम्बवन्ताय नमः अ० । ॐ श्रीप्रणवाय नमः अ० । इत्यङ्गमन्त्रान् प्रपूजयेत् ।

पूर्वोक्त क्रम से द्वारपालादिको की पूजा के बाद निम्न प्रकार से भगवान् के दश अग देवताओं को पूजे ॐ विघ्नेशाय नमः इस मन्त्र को बोलकर अर्घ्यादि से विघ्नेश की पूजा करे। ॐ वाण्यै नमः इस मन्त्र को बोलकर वाणी की अर्घ्यादि से पूजे । ॐ दुर्गायै नमः इस मन्त्र से दुर्गाजी की अर्घ्यादि से पूजे । ॐ क्षेत्रपालाय नमः इस मन्त्र से अर्घ्यादि द्वारा क्षेत्रपालों की पूजा करे । ॐ सूर्याय नमः इस मन्त्र से सूर्य की अर्घ्यादि से पूजा करे । ॐ चन्द्राय नमः इस मन्त्र से चन्द्र की अर्घ्यादि से पूजा करे ॐ नारायणाय नमः इस मन्त्र को बोलकर नारायण को अर्घ्यादि से पूजे ॐ नारसिंहाय नमः इस मन्त्र से अर्घ्यादि द्वारा नारसिंह की पूजा करे । ॐ वासुदेवाय नमः इस मन्त्र से वासुदेव की अर्घ्यादि से पूजा करे । ॐ वाराहाय नमः इस मन्त्र से अर्घ्यादि से वाराह की पूजा करे । इस प्रकार अग देवताओं की पूजा करने के बाद श्रीरामजी के अग मन्त्रों की निम्न रूप से पूजा करे—ॐ श्रीसीतायै नमः इस मन्त्र को बोलकर श्रीसीताजी की अर्घ्यादि सभी सामग्री से पूजा करे । तथैव ॐ लक्ष्मणाय नमः इस मन्त्र से श्रीलक्ष्मणजी की अर्घ्यादि से पूजा करे । ॐ श्रीहनुमते नमः इस मन्त्र से अर्घ्यादि द्वारा श्रीहनुमानजी की पूजा करे । ॐ श्रीभरताय नमः इस मन्त्र से श्रीभरतजी की अर्घ्यादि से पूजा करे । ॐ श्रीशत्रुघ्नाय नमः इस मन्त्र से अर्घ्यादि द्वारा श्रीशत्रुघ्नजी की पूजा करे । ॐ श्रीविभीषणाय नमः इस मन्त्र से अर्घ्यादि से श्रीविभीषणजी की पूजा करे । ॐ श्रीसुग्रीवाय नमः इस मन्त्रके द्वारा अर्घ्यादि से श्रीसुग्रीवजी की पूजा करे । ॐ अगदाय नमः इस मन्त्र से अगदजी की अर्घ्यादि से पूजा करे । ॐ श्रीजाम्बवन्ताय नमः इस मन्त्र से श्रीजाम्बवन्तजी की अर्घ्यादि से पूजा करके ॐ श्रीप्रणवाय नमः इस मन्त्र से प्रणव की अर्घ्यादि से अच्छी प्रकार प्रेम भावना युक्त होकर पूजा करे ।

“अङ्गान् विना रामो विघ्नको भवति” ऐसा श्रीरामोपनिषद् में लिखा है अतः सर्वेश्वर श्री रामजी के पूर्वोक्त विघ्नेश आदि दश अग देवता तथा श्रीसीता आदि दश अग मन्त्रों की पूजा सावधानी से मभक्तिभाव करना चाहिये । इसी ओर आचार्य श्रीने सकेत-प्रपूजयेत् लिखकर किया है । क्योंकि साग पूजा के बिना पूजा सफल नहीं होती है ।

ॐ सर्वेभ्यो भगवद्गणाधिपेभ्यो नमः अ० । ॐ सर्वेभ्योभगवत्पार्षदेभ्यो नमः अ० । ॐ सर्वेभ्यो भगवत्परिजनपरिचरेभ्यो नमः अ० । ॐ नीन्यै नमः अ० ।

ॐ मुक्त्यै नमः० । ॐ साङ्गसायुधसपरिवारसमहिपीकायदिव्यमङ्गलमूर्त्तये नमः० ।

पूर्व वर्णित क्रमसे सर्वेश्वर श्रीरामजी के अंगों की पूजा करने के बाद पूर्वोक्त क्रम से ही ॐ सर्वेभ्यो भगवद्गणाविभेभ्यो नम इसे बोलकर भगवान् के सभी गणाधिपों की अर्घ्यादि से पूजा करने के ॐ सर्वेभ्यो भगवत्परिजनेभ्यो नम इस मन्त्र से भगवान् के सभी परिजनों की अर्घ्यादि से पूजा करे । तब ॐ नीत्यै नम इस मन्त्र से नीति की अर्घ्यादि से पूजा करे । ॐ मुक्त्यै नम इस मन्त्र से अर्घ्यादि से मुक्ति की पूजा करे । अनन्तर ॐ साङ्गसायुधसपरिवारसमहिपीकाय दिव्य मङ्गलमूर्त्तये नम इस मन्त्र से भगवान् के अंगों आयुधों परिवारों परिकरों आदि तथा सर्वेश्वरी श्रीसीताजी के साथ दिव्य मङ्गल विग्रह सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी की अर्घ्यादि उपचारों से पूजा करे ।

अथेत्यं पूर्वोक्तैः सहभगवन्तं श्रीराममभ्यर्च्य अञ्जलिनापुष्पाण्यादाय—

अनन्तर पूर्वोक्त विधिसे सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी की अंग आयुध परिवार परिकर तथा श्रीसीताजी के साथ पूजा करने के बाद अञ्जलि में पुष्पों को लेकर निम्नदलोको से प्रार्थना कर श्रीचरणारविन्दों में पुष्पाञ्जलि समर्पण करे—

सुरासुरेन्द्रादिभनोमधुव्रतेर्निषेव्यमाणाङ्घ्रिसरोरुह प्रभो ।

असंख्यकल्याणगुणामृतोदधे? सुरेश? रामाद्भुतवीर्यमापते ।१।

समस्त सुरासुर देवदानव इन्द्रप्रमुखों के मनरूपी भ्रमरों से सर्वदा स सेव्यमान चारणरूपी कमलवाले सर्वसमर्थ हैं प्रभु श्रीरामजी? हे देवेश? अत्यन्त अद्भुत लोकोत्तर चमत्कारकारी पराक्रमशाली सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी? असंख्य अनन्त कल्याण गुणरूपी अमृत के महासमुद्ररूप हैं श्रीरामजी? आपके श्रीचरणों में अनेक बार सादर दण्डवत् प्रणाम हैं ॥१॥

अपारसंसारमहर्णवप्लवं पदाम्बुजं तं प्रणतार्तिनाशनम् ।

निषेव्यमाण सगणैःशिवादिभिर्गतोऽस्म्यहं ते शरणंशरण्यम् ।२।

हे प्रणतार्तिनाशक श्रीरामजी? अपार संसाररूपी महासमुद्र को पार करने के लिये सुन्दर नौका रूप आपके शरण में आकर प्रणाम-नमस्कार करनेवाले जनो के सर्व दुखों को सर्वदा के लिये नाश करने वाले तथा अपने समस्त गण परिजन और परिकरों के साथ श्रीशिवजी श्रीविष्णुजी और श्रीब्रह्माजी के द्वारासर्वदा ससेव्यमान यानी निरन्तर सेवित शरण्य अर्थात् सबों के लिये शरण में आने योग्य या शरण में आये जीवों को सर्वदा के लिये अभय कर देनेवाले उन प्रसिद्ध तीनों लोकों को पवित्र करने वाले सर्वसमर्थ आपके श्रीचरणरूपी कमलों के शरण में आया हूँ प्रभो? संसार भय से त्रस्त मेरी रक्षा करे ॥२॥

विकचपद्मदलायतलोचना प्रणतकामदुघाङ्घ्रिसरोरुहाम् ।

अशरणः शरणां जनकात्मजे प्रतिदिनं भवतीमनुचिन्तये ॥३॥

अच्छी तरह से विकशित-खीले हुये कमल पत्र के समान विशाल तथा अति मनोहर नैऋत-वाली तथा आपके शरण में आकर प्रणाम करनेवाले जनो के सत्र कामनाओं को पूर्ण करनेवाले चरणरूपी कमल वाली और अशरण यानी अन्य रक्षक या आधार से रहित जीवों को सर्वदा शरण

प्रदान करनेवाली हे जनकनन्दिनी सर्वेश्वरी श्रीसीताजी? सबो को अभय प्रदान करनेवाली आपको मैं प्रतिदिन सादर चिन्तन यानी स्मरण के साथ नमन करता हूँ ॥३॥

श्रीरामकैङ्कर्यपरायणम्मुहुर्मुहुश्च सीतेशनिदेशकारिणम् ।

तमेकवीरंशरदिन्दुकीर्तिं नमाम्यहं लक्ष्मणमग्रमेयम् ॥४॥

सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी के कैकर्य-सेवा में सर्वदा तत्पर तथा बारबार किसी भी प्रकार के सर्वेश्वरी श्रीसीताजी के स्वामी श्रीरामचन्द्रजी के आज्ञाओं को परिपालन करनेवाले शरदकालिन चन्द्रमा के समान स्वच्छ कीर्तिवाले अनन्यवीर-अतिपराक्रमी शूर वीर बल तथा शौर्यादि में अन्य उपमा रहित उन प्रसिद्ध वीर श्रीलक्ष्मणजी को मैं नमस्कार करता हूँ ॥४॥

मणीन्दुगर्भं मुकुटाधिनाथंश्रीमत्किरीटं मणिकुण्डले च ।

श्रीकौस्तुभादीनिचदिव्यभूषणान्येतानि नित्यं प्रणमामि विष्णोः ॥५॥

मणि रूपी चन्द्रमा है गर्भ-बीच भाग में जिसके ऐसे मुकुटों में श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्रजी के मुकुट संपूर्ण शोभा से युक्त श्री रामजी का किरीट तथा मणियों से शोभित दिव्य कुण्डल और दिव्य श्रीकौस्तुभमणि आदि समस्त दिव्य आभूषणों को सर्वदा प्रणाम करता हूँ ॥५॥

महाबलं वायुसुतं महामतिं प्रपन्नचामीकरचारुलोचनम् ।

श्रीरामपादाब्जनिविष्टमानसं द्विडन्तकं श्रीहनुमन्तमीडे ॥६॥

सन्तप्त अति तपाये हुये सोने के समान अति सुन्दर नेत्र वाले अति बलशाली और महा-बुद्धिशाली तथा श्रीरामचन्द्रजी के चरणरूपी कमलों में सर्वदा सन्निवेपित मनवाले और उपासक के शत्रुओं का नाश करनेवाले वायुदेव के पुत्र सर्वैश्वर्य सम्पन्न श्री हनुमानजी की प्रार्थना यानी स्तुति करता हूँ ॥६॥

प्रत्यूहव्यूहभङ्गं विदधदुरुचलशक्तिमान्सर्वकारी

भूरिश्रेयः प्रतापोमुनिवरनिकरैः स्तूयमानो विमानः ।

रक्षो दैत्यादिनाशी क्षुभितजलनिधिर्लोकजिल्लोकमान्यो

धन्योनोमङ्गलौघंसपदिसुकुरुताद्रामशस्त्रास्रसङ्घः ॥७॥

अति वेगवाला तथा महा सामर्थ्य से युक्त अघटित घटना आदि सब कुंठ करने में सर्वदा समर्थ और अत्यन्त श्रेष्ठ तथा प्रतापी तथैव सर्वदा अभिमान से रहित और राक्षस तथा दैत्यादि समूहों का नाश करनेवाला सर्वदा मननशील मुनिओं से अहर्निश संस्तुत, तथा अति अगाध समुद्र को अपने अलौकिक तेजसे क्षुभित करनेवाला और सर्वलोको को जितने वाला एवं सर्वलोक समान्य तथा अतिधन्य यानी सर्वविजयादि ऐश्वर्य सम्पन्न सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी का अस्त्र तथा शस्त्र (जिसको मन्त्र के बिना चलाया जाता है उसे शस्त्र कहा जाता है, जैसे बाण खड्ग आदि । मन्त्र प्रयोग पूर्वक जिसका प्रयोग किया जाता है उसे अस्त्र कहते हैं, जैसे ब्रह्मास्त्र आग्नेयास्त्र आदि) समूह है वह अति शीघ्र ही मेरे विघ्न समूहों का विनाश करता हुआ समस्त मंगल संप्रदान करे ॥७॥

सुग्रीवमुख्यान्परितोजनान्विभोः सद्धारपालान्नलनीलमुख्यान् ।

गणाधिपान्देववरस्यविष्णोर्नमाम्यहंनित्यमशेषपार्षदान् ॥८॥

सर्वव्यापक तथा देवश्रेष्ठ सर्व नियमन शील श्रीरामचन्द्रजीके श्रीसुग्रीव प्रभृति सर्वदा सान्निध्य प्राप्त परिजन तथा सभी द्वार पालो के साथ श्रीनलनील प्रमुख द्वारपालो और समस्त गणाधिपतिओ के साथ श्रीरामचन्द्रजी के नित्यपार्षदो को मैं नित्य ही नमन-सादर प्रणाम करता हूँ ॥८॥

हरि ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्माणि प्रथमान्यासन् ।

तेह नाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वेसाध्याः सन्तिदेवाः ॥९॥

सिद्ध संकल्प देवोंने यज्ञ से यानी याग के साधनरूप संकल्प से अथवा पूर्वोक्त सामग्री से यज्ञ को अर्थात् सर्वत्र व्यापक रूप से स्थित श्रीरामरूप विष्णु को “यज्ञोवैविष्णु” इस श्रुति से और “यज्ञोऽहमहमेवाज्यमहमग्निरहं हुतम्” “सर्व विष्णु मयं जगत्” इत्यादि स्मृतियो से उस यज्ञ में पूजित किया उन लोगो से आचरित देवाराधनादिक ही अन्य धर्मो के अपेक्षा श्रेष्ठ सनातन श्रीवैष्णव धर्म के रूप में प्रचलित हुये । जो आज भी विश्वका सर्वश्रेष्ठ धर्म के रूप में मानव को मार्ग बता रहा है । वे पूर्वोक्त रीतसे यजन करनेवाले परमपद श्रीसाकेत लाभात्मक नाक सर्व पाप रहित अयोध्या को निश्चय रूप से प्राप्त किये हैं । जिस दिव्य धाम में प्राचीन साध्य आदि देव लोग अर्थात् नित्य मुक्त श्रीहनुमान् आदि नित्यपार्षद विराजमान हैं ॥९॥

जगत्पते? श्रीश? जगन्निवास? प्रभोः? जगत्कारण? रामचन्द्र ? ।

नमो नमः कारुणिकाय तुभ्यं पादाब्जयुग्मेतवभक्तिरस्तु ॥११॥

हे जगत्पति श्रीसीतानाथ? हे जगन्निवास? हे सर्वजगत्कारण भगवान् श्रीराम? हे दयासागर श्रीराम? आपके चरणो में मेरा शतश नमस्कार हो तथा आपके पादपद्म युग्म में सदा मेरी भक्ति बनी रहे ॥१०॥

मनोमिलिन्दस्तपपादपङ्कजे रमार्चिते संरमतां भवे भवे ।

यशः श्रुतौ ते मम कर्णयुग्मकं त्वद्भक्तसङ्गोऽस्तु सदा मम प्रभो ॥

हे भगवन् श्रीरामचन्द्र? मेरा अन्तःकरण रूप भ्रमर मधुपान कर्ता जन्तु विशेष सकल सौभाग्यवती श्रीसीताजी से समाहृत आपके पद युग्म में सर्वदा रमित होता रहे । तथा मेरे दोनों श्रवणेन्द्रिय आपके यश कीर्ति को सुनने में संलग्न रहे और आपके जो अनन्य भक्त हैं उनके साथ हमारा सत्संग होता रहे । अर्थात् मैं भक्तों के साथ ही वार्तालाप करता रहूँ ॥११॥

इत्यभिष्टुवन् पुष्पाञ्जलिसर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रपदारविन्दे समर्प्य—

इस प्रकार से श्रीरामजी की प्रार्थना करते हुये पुष्पाञ्जलि सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी के श्रीचरण कमलो में समर्पण करके—

उरः शिरोदृष्टिमनोवचः पदद्वयप्रराजत्करयुग्मजातुभिः ।

कङ्गैः क्षितौ तं प्रणमेदथाष्टभिर्दीर्घै तथैते कृतधीश्चदण्डवत् ।

इति साष्टाङ्गप्रणामं कुर्यात् ।

पूर्वोक्तक्रम से भगवान् की प्रार्थना करने के बाद प्रणाम करने का प्रकार—नियम बतलाने के लिये आचार्य श्री कहते हैं सर्वेश्वर परमकारण रूपसे स्थित श्रीरामचन्द्रजी को प्रणाम करने के लिये निश्चित बुद्धिवाले महापुरुष मन, वचन दोनों पैर दोनों जानु घुटना छाती शिर मस्तक नेत्रयुग तथा फैलोया हुआ दोनों बाह हाथ इन आठों प्रकार के अंगों से पृथिवी में दण्ड की तरह लेट कर गिरकर सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी को सभी भक्त लोग सादर प्रणाम करें। इस प्रकार साष्टांग दण्डवत् प्रणाम करें। अनन्तर राजभोगादि के लिये निम्न प्रकार से व्यवस्था करें।

अथ महानैवेद्यसमये पात्राणि प्रक्षाल्य पूर्ववत्पूर्णकुम्भ जलेन पात्राणि पूरयित्वा भोज्याशनार्थं पादुके प्रसार्याध्यादिभिरभ्यर्च्य मधुपर्कं च प्रदाय भगवतः श्रीरामचन्द्रस्य पुरस्ताच्छुचिप्रदेशे यथाशक्तिसम्पादितचतुर्विधभोज्यादीन्युपहृत्य—

पूर्वोक्त विधान से पूजा प्रणामादि के अनन्तर राजभोग के समय में पूजा पात्रों को प्रक्षालन कर पूर्व के समान ही पूर्णकुम्भ के जल से पात्रों को भरकर भोजन करने जाने के लिये पादुका को आगे करके पूर्ण प्रदर्शन विधान से पाद्य अर्घ्य आचमनीय आदि से पूजाकर मधुपर्क समर्पण करें। अनन्तर सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी के समक्ष अति पवित्र किये गये स्थान में यथा विधियथा शक्ति संपादित चतुर्विध चार प्रकार के लेह्य पेय चर्व्यचोस्य भोज्य विशुद्ध सामग्री को अति आदर के साथ रखकर निम्न प्रकार से प्रार्थना करें—

दोषाकर नीचमथाल्पशक्ति चैतन्यहीनं त्वशुचि त्वनर्हम्
त्वद्भूत्यकर्मण्यपराधभाजनम्पर दुरात्मानमितीत्यमेव ॥१॥

सुचिन्तयन्मामपि मत्समर्पितमशेषपापापहनामधेय ?।

उपेक्षितुं त्वच्चरणावलम्बितं न चार्हसि त्व जगदीशराघव ?।

शरणागत जीवों के सम्पूर्ण पापों के नाश करने में प्रसिद्ध 'पतीतपावन सीताराम' ऐसे नाम से जगद्विख्यात श्रीरामजी? आदर के साथ पवित्रतया मेरे द्वारा समर्पित नैवेद्य को आप स्वीकार करें तथा अनन्त दोषों का भण्डार नीचवृत्तिगाला और अति अल्पशक्तिगाला और तथातथ्य विवेकसे रहित अपवित्र तथा आपके कैरव्य में अयोग्य सब जन कन्याणकारि आपके उद्देश्य कर्म न करने से अपराध के पात्र बने अत्यन्त दुरात्मता से युक्त ऐसे ही अन्य अनन्त अब गुणों से लिप्त यह है ऐसा विचार कर हे जगदीश्वर सर्वेश्वर श्रीराघवजी? आप आपके दिव्यचरणों के अवलम्बन किये मेरी भी उपेक्षा न करें ॥१॥२॥

कौशल्याजनकात्मजावरगुणश्रीलक्ष्मणैरर्पितं

पंपायां शवरीसर्पितमहो दिव्याद्भुतस्वादकम् ।

भारद्वाजसमर्पितं च सरसं क्षीरं व्रजे यत्स्वयं

तयद्वैङ्गावमर्जितं सहधृतं यद्यज्ञपत्न्यर्पितम् ॥३॥

अन्यैर्मुक्तजनैः कुचैलविदुराद्यैरर्पितं त्वत्प्रियं

पथ्यं पाकविशेषसंयुतमथो दृष्टिप्रियं राघव ? ।

रुच्यं दोषविवर्जितं सह यथाऽशेषः प्रभो? भोक्तृभिः

स्वीकर्तुश्च तथाहंसि त्वमधुना भक्त्यार्पितं ते मया॥४॥

हे राघव ? रघुकुल शिरोमणि श्रीरामजी ? आपने श्रीकौशल्या जी श्रीजनकनन्दिनी श्रीसीताजी सर्वश्रेष्ठ गुणों से युक्त श्रीलक्ष्मण जी से सादर सस्नेह समर्पित नैवेद्यादि तथा पंपामे शवरी द्वारा स स्नेह समर्पित लोकोत्तर दिव्य अद्भुत स्वादवाले फलादि तथैव श्रीभारद्वाज मुनि से सादर समर्पित अति रस वाले फलादि तथा स्नेही व्रजवासी जनो से समर्पित सुखादु दूध वह अद्भुत स्वाद वाले ताजा नवनीत-मखनन और उन स्नेही यज्ञ पत्नियों से सादर समर्पित ताजे घी से सम्पृक्त विविध भोज्य पदार्थ तथैव अन्य अनेक मुक्तजनो और साधारण स्थिति मे रह रहे श्रीविदुर जी तथा उनकी धर्मपत्नि से सस्नेह समर्पित आपको अतिप्रिय अनेक प्रकार के पाक से युक्त-नाना प्रकार के वानगी जो पश्य तथा देखने मे अति सुहावे थे तथैव रुचिकर और सब प्रकार के दोषों से रहित थे उन सबों को आपने अपने समस्त सेवकों दिव्य पार्षदों के साथ जैसे सस्नेह स्वीकार किया प्रभो ? सर्व समर्थ श्रीरामचन्द्रजी ? आज मेरे द्वारा आपको भक्ति पूर्वक सादर समर्पित इन भोज्य नैवेद्यादि को भी उसी प्रकार स्वीकार कर इस अवोच आपके शरणापन्न बालक को कृतार्थ करे ।३-४

हरि ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षं गुं शीर्णोद्यौः समवर्तत ।

पद्भ्यां भूमिदिशः श्रोत्रात्तथा लोकांऽअकल्पयन् ॥५॥

इस प्रकार विनम्र भाव से प्रार्थना कर पुन-सर्वकारणभूत सर्वेश्वर आपके ही नामि से अन्तरिक्ष आकाश उत्पन्न हुआ तथा शिर से हुलोक तथा भूमि पावो चरणों से और दिशाए कान से उत्पन्न हुए हैं यानी पूर्वोक्त क्रमसे ही विश्वरूप आप से ही आकाशादि सभी लोक-स्थावर जंगमादिक सब प्रपञ्च उत्पन्न हुआ है अतः विश्वरूप आपको आपकी ही सामग्री सादर समर्पण कर रहा हूँ उन्हे स्वीकार करे ॥५॥

इति विज्ञाप्यार्ध्यं जलेनप्रोक्ष्य श्रीमन्त्रराजेनाभिमन्त्र्य सुरभिमुद्रां प्रदर्श्य श्रीरामं जनकात्मजामनिलजमित्यादिगुरुपरम्परामनुसन्धाय निवेदयेत् ।

इस प्रकार नैवेद्योंको स्वीकार करने के लिये सादर निवेदन कर अर्ध्य जल से प्रोक्षण करे । अनन्तर पङ्कज श्रीमन्त्रराज से अभिमन्त्रित कर सुरभि मुद्रा दिखाकर श्रीरामजी से लेकर अपने आचार्य पर्यन्त के गुरुपरम्परा का स्मरण कर नैवेद्य निवेदन करे ।

ततो जलपानहस्नशोधनगण्डूषपाद्याचमनादिभिरभ्यर्च्य—

अनन्तर सर्वेश श्रीरामजी को जलपान कराना हाथ प्रक्षालन गण्डूष कराना और आचमन कराना तथा श्रीचरण प्रक्षालन आदि प्रक्रियाओं से पूजा करके—

शृणोमिसीतापतिचित्रसत्कथा वदामिसीतापतिकीर्तिमक्षयाम् ।

स्मरामिसीतापतिदिव्यविग्रहं वृणोमिसीतापतिभक्तिमुत्तमाम् ॥१॥

मैं अन्य लौकिक विषयों से विरत होकर सर्वेश्वर श्रीसीता पति श्रीरामजी की सब वेदों से अति अद्भुत रूप से वर्णित भवपाश नाशक कथा को सर्वदा सुनता हूँ तथा श्रीसीतापति की हूँ

अक्षयकीर्ति श्रीरामजी के दिव्य कथा प्रसंगो को सर्वदा गान करता हूँ । तथैव श्रीसीतानाथ राम चन्द्रजी के दिव्य सर्वलोकोत्तर सुन्दर श्रीविग्रहका सर्वदा स्मरण करता हूँ और सर्वजन शरण्य श्री सीतापति श्रीरामजी के सर्वोत्कृष्ट भक्ति को ही वरण यानी स्वीकार करता हूँ जो सर्वजनो को सायुज्य मुक्तिदायक है अन्यो की भक्ति नहीं बथोकि अन्यदेव सर्वदा के लिये सब जीवो को सब जीवो या दुखो से अभय प्रदान करने मे समर्थ नहीं है ॥१॥

ब्रजामिसीतापतिदिव्यमन्दिर तथाचसीतापतिसत्प्रपन्नताम् ।

युनज्मि सीतापतिचिन्तनेमनः तनोमि सीतापतिदासङ्गतिम् ॥२॥

मैं अन्य विषयो-मुखता को छोडकर सर्वदा श्रीसीतापति श्रीरामजी के दिव्य मन्दिर के तरफ ही जाता हूँ, तथा मनुष्य देह की सफलता के लिये श्रीसीतापतिजी की शरणागति को सर्वतो भाव से स्वीकार करता हूँ । तथैव श्रीसीतापतिजी के चिन्तन मे मन को सदा लगाये रखता हूँ । और श्रीसीतापतिजी के दास अनन्य सेवक मद्भक्तो के साथ सगति को अधिक से अधिक बढ़ाया करता हूँ यानी श्रीरामदासो की सगति सदा किया करता हूँ अन्यो की नहीं ॥२॥

अवैमि सीतापतिमञ्जुबन्धुतातथाचसीतापतिदिष्टभोग्यताम् ।

ततश्चसीतापतिनित्यधामदां करोमिसीतापतिभक्तिमुत्तमाम् ॥३॥

मैं श्रीसीतापतिजी के मञ्जु सुन्दर या हृदयबन्धुता को स्वीकार करता हूँ । अथवा श्रीसीतानाथ ही मेरे एकमात्र अनन्य बन्धु हैं इस बात को मैं अवगम करता हूँ । तथा श्रीसीतानाथजी के द्वारा निर्दिष्ट भोग्य पदार्थ को ही भोगता हूँ यानी मेरे कर्मानुसार मेरे लिये भोग्यतया समुपस्थित पदार्थो को श्रीराम शेष बुद्धि से यथा योग्य उपभोग करता हूँ । तथैव श्रीसीतापति के नित्यधाम श्रीसाकेत को देनेवाली श्रीसीतापति श्रीरामजी की सर्वोत्कृष्ट भक्ति-शरणागति सर्वाभयप्रदप्रपन्नता को स्वीकार करता हूँ ॥३॥

करोमि सीतापतिपाददासतां नमामि सीतापतिपादपङ्कजम् ।

पठामि सीतापतिकान्यसंहति जपामि सीतापतिमन्त्रभूपतिम् ॥४॥

मैं अन्य सोमोन्य जनों की या देवोकी दासता को छोडकर श्रीसीतापतिजी के श्रीचरणकमलों की दासता को ही स्वीकार करता हूँ और श्रीसीतापतिजी के चरणकमलो को ही सर्वदा नमन सादर दण्डवत प्रणाम करता हूँ, तथैव श्रीसीतापतिजी के दिव्य गुण सम्पन्न कान्य समूहो को ही सदा पाठ करता हूँ, और श्री सीतापतिजी के महामन्त्र मन्त्रराज पडक्षर महामन्त्र को ही एक चित्ततया सदा जपता हूँ अन्य मन्त्र का नहीं, क्योकि अन्यमन्त्र चित्त मे भ्रम पैदा करने वाले हैं निश्चित रूप से मोक्षदायक नहीं मोक्ष ही जीवात्माका चरमलक्ष्य है अतः सायुज्य मुक्तिप्राप्ति के लिये सदा श्रीरामषडक्षर महामन्त्र को ही जपता हूँ ॥४॥

करोमि सीतापतिविग्रहार्चनं तथा च सीतापतिमूर्तिदर्शनम्

गुणान्धिसीतापतिनामकीर्तनं परेशसीतापतिपादवन्दनम् ॥५॥

मैं सर्वदा श्रीसीतापतिजी के दिव्य श्रीविग्रहका पूजन किया करता हूँ, तथैव श्रीसीतापतिजी के सर्वमंगल कारक दिव्यमूर्तिका दर्शन सर्वदा किया करता हूँ, और सर्वगुणो के सागर श्रीसीता-

पतिजी के सर्व अमंगलों को अपहरण कर जप करनेवालों को सब प्रकार के मंगलों का प्रदान करने वाले दिव्य नामोक्ता सकीर्तन रातदिन किया करता हूँ । तथा सर्वेश्वर श्रीसीतापतिजी के लोक कल्याणकारक चरणकमलों की वन्दना सदा किया करता हूँ, जिन श्री चरण की धूली के स्पर्शमात्र से अधरूपा गौतम नारी का उद्धार हुआ तथा जिनके चिन्तन से अनन्त पतितों का कल्याण हुआ उन पाद पद्मों की सदा वन्दना करता हूँ ॥५॥

भजामि सीतापतिमेवकेवलं रटामि सीतापतिमेव केवलम् ॥

श्रयामि सीतापतिमेव केवलं प्रयामि सीतापतिमेवेकेवलम् ॥

मैं केवल श्रीसीतापतिजी का ही भजन-यानी सेवा करता हूँ अन्यो का नहीं, तथैव श्रीसीतापतिजी के दिव्य नामो का ही रटन करता हूँ अन्य नामो का नहीं, और सर्वाश्रय दाता श्रीसीतापतिजी का ही आश्रय लेता हूँ अन्यो का नहीं, तथा सर्वशरण्य श्रीसीतापतिजी के तरफ ही जाता हूँ अन्यो के तरफ कदापि नहीं जाता हूँ ॥६॥

इत्याद्यनन्यतावेदनस्तोत्रपुरुषसूक्तादिकं पठन् प्रदक्षिण नमस्कारादिभिः सपूज्य भगवन्तं श्रीसीतासमेतं श्रीरामचन्द्रं पर्यङ्क के निवेद्य—

इत्यादि ज गु श्रीगगाधराचार्य प्रणीत अनन्यतावेदन दिव्य स्तोत्र तथा पुरुष सूक्त आदि को पढ़ता हुआ श्रीरामजी की प्रदक्षिणा तथा नमस्कार आदि से अच्छी तरह से पूजा करके श्रीसीताजी के साथ भगवान् श्रीरामजी को पर्यंक में सन्निवेश करके निम्न प्रकार से प्रार्थना करे—

पर्यङ्कासनमारुह्य सीतया सहितः प्रभो ? ।

निद्रां कुरुस्व भगवन् ? पार्षदैरभिरक्षितः ॥१॥

इति प्रार्थयन् निम्नाष्टकं गायन् शाययेत् ।

पदैश्वर्य परिपूर्ण सर्व समर्थ सर्वेश्वर श्रीरामजी ? स्वच्छस्फटिकसन्निभपर्यंकासन दिव्य पलंग पर समारोहित होकर श्रीसीताजी के साथ श्रीहनुमदादिपार्षदों से अभिरक्षित होकर आराम करे यानी सुखनिद्रा का अनुभव करे ॥१॥

इस प्रकार से प्रार्थना करते हुये निम्न श्रीरामदोलिकाशयनाष्टक का मधुर स्वर से गान करता हुआ श्रीरामजी को सुलावे ।

माता गीत्वा स्वपुत्रं यदि शयनगतं संविधत्तेऽथ शेषिन् ?

शेषत्वात्सात्म्यतत्त्वं गतवत् इह मे कोशलाधीशजायाः ।

वात्सल्यातुल्यपात्रं स्वपिहि गुणगणोदारगीतेन गीतो

देहे सौधेऽतिशुद्धे भजनकलनतः स्वान्तदोलाऽधिशायी ।१।

पालने में बालक माता का गीत सुनते सुनते सो जाते हैं अथवा गीत गाकर माता बच्चे को सुलाती है ऐसा अनुभव है । इसलिये समस्त जगत का प्रयोजन होने के कारण हे शेषिन् ! मैं तथा श्रीकौशल्याजी दोनों का एक मात्र आपके अधीन होने से शेष रूप से अभेद होने के

कारण मेरे तथा श्रीकौशल्याजी के अनुपम दुलारे श्रीरामजी ! भजन के कारण अत्यन्त निर्मल सुधा-धवल प्रासाद रूपी मेरे देह मे मेरे मन रूपी दोला पर लेटे हुये तथा गुण गण कीर्तन के गीत सुनते सुनते सो जाये मेरे मन मे स्थिर रूप से वास करे ॥१॥

कौशल्या कीर्तिधन्या यदुदरजनिमागाज्जगद्यत्तनुः स

श्रीरामो रावणास्याऽप्युपनवशिरसां कर्तितैकेषुणाद्राक् ।

जामाताऽन्वर्थनाम्नो नृपतिकुलमणेर्यो विदेहस्य कुर्यात्

स्वापं दोलां श्रितो हन् मम दशरथसूभक्ति गङ्गाम्बुधौतम् ॥२॥

वह कौशल्या अपनी कीर्ति से धन्यवाद का पात्र है, क्योंकि स्थूल सूक्ष्मचिदचिदात्मक यह ससार जिसकी शरीर है, ऐसे श्रीरामजी ने जिसके उदर से अवतार-जन्म लिया था । इससे बड़ी कीर्ति और क्या हो सकती है ? वह श्रीरामजी जिन्होंने एक ही बाण से अत्यन्त लघुता से रावण के दश मस्तको को काट दिया था तथा विदेह कहे जाने वाले राजाओ के कुलश्रेष्ठ ऐसे विदेह के जो जामाता है । ऐसे श्रीरामजी श्रीदशरथजी के पुत्र मेरे भक्ति रूपी गङ्गाजल से पवित्र ऐसे हृदय रूपी दोला पर रहनेवाले निद्रा को प्राप्त करे अर्थात् भक्ति से भरे मन मे सदावास करे ॥२॥

नीलामो नीलपद्मोद्भवकृतजगतीनाथ ! सीताधिनाथः

सद्भिर्भोग्योऽपि भोग्यं ननु निखिलमिदं यस्यलीलाधृताङ्गः ।

धन्वोन्मुक्तेषुणाऽब्जच्छदमिव सितवां स्ताटकोरः परेशो

भक्तिक्षीराब्धिशेषं सदपि मम मनोदोलिकांसोऽधिशेताम् ॥३॥

अपने नाभिकमल से उत्पन्न हुये ब्रह्माजी के द्वारा उत्पन्न किये गये जगत के स्वामी हे श्रीरामजी नीलकान्ति वाले तथा श्रीसीताजी के प्राणेश्वर आप सज्जनो के सेवनिय हैं पुनश्च यह संपूर्ण ससार आपकी लीला का विषय होने से आपका भोग्य है । आपने ताटका की छाती को धनुष से छोड़े गये बाण से कमल के पत्ते के सदृश सरलता से ही काटा था । आप ही पर भगवान् हैं, इस प्रकार जगत के कर्त्ता तथा पालक एवं दुष्ट का निग्रह करने वाले आप भक्ति रूपी क्षीर सागर मे शेषनागरूपी मेरे मन की दोला पर शीघ्र ही सो जाय ऐसी मेरी प्रार्थना है आप शेष शय्या के समान ही मेरे मन मे सदा निवास करे ।

राज्यं दत्त्वाऽनुजायाऽतिविपुलविलसच्छ्रीसमिद्धं निरीहो

वक्षस्वीवीरलक्ष्मी वसतिरनुपमोदारकीर्तिर्निरर्तिः ।

अत्राजीहृक्षमणेनाऽतिगहनविपिनं भक्तिभाजाऽनुजेना

ऽऽशेतां दोलां वरेण्यो मम हृदयकृतां सज्जनानां शरण्यः ॥४॥

विशाल छाती वाले तथा वीर के सभी गुणों से युक्त श्री रामजी निष्काम होने के कारण विशाल एवं समृद्ध राज्य अपने छोटे भाई श्रीभरतजी को देकर अतुल्य एवं महान् कीर्ति से शोभित तथा किसी प्रकार की पीडा को मन मे नहीं रखते हुये छोटे भाई तथा परम भक्त ऐसे

श्रीलक्ष्मणजी के साथ अत्यन्त भयकर वन में गये वे सज्जनो के रक्षक पुरुषोत्तम श्रीरामजी मेरे मन से बनाये पालना में ही रहने का विचार करे ऐसी मेरी उनसे प्रार्थना है—ऐसे पुरुषोत्तम श्रीरामजी में ही मेरा मन सदा लगा रहे ॥४॥

साकेतेशो विमातुर्वचनकरवरो ज्ञानिनामग्रभूमिः

पौरैर्पित्रैस्तथान्यैरनुगमनकरै दण्डकां साकमाप्तः ।

शेषाणां तन्मुनिनां परमहितकृते दिव्यभैषज्यतुल्यो

दोलायां स्वापमेयाद्रघुकुलतिलकोमानसे मे सरामः ॥५॥

रघुकुल के तिलक समान साकेतपुर के स्वामी तथा ज्ञानियो का आलम्बन स्वरूप तथा विमाता के आज्ञाकारियो में श्रेष्ठ होने के कारण विमाता की आज्ञा से दण्डक नाम के वन में वहाँ के परम भक्त मुनियो के परम कल्याण को साधन करने के लिये दिव्य औषध के तुल्य ऐसे श्री रामजी अनुगमन करते हुए नगर के मित्र तथा अन्य जनो के साथ ही पहुँचे थे । ऐसे अलौकिक विनय से सम्पन्न तथा अप्रतिमभक्तवत्सल श्रीरामजी मेरे मन रूपी पालने में शयन करे और मेरा मन सर्वदा उनके ध्यान में ही मग्न रहे ॥५॥

सुग्रीवायाऽधिराज्यं दददभिनवकाऽब्दच्छविर्वालिकालः

पारावारेऽप्यपारे गिरिवरनिकरैर्बद्धसेतुर्विभुर्यः ।

प्राकारैः प्रावृतां तां दशमुखनगरीं ध्वंसितां ध्यानगम्यो

दोलां चेतोऽधिशेतां मम सकलकलोध्वन्विनां ग्रामणीःसः ॥६॥

जो श्रीरामजी नवीन मेघ के समान कान्ति वाले हैं, वनूर्धरो में मुख्य हैं, जो वालि के लिये यमराज समान हैं तथा सुग्रीव को विशाल राज्य देने वाले हैं । तथा जिन्होंने पर्वतो के समूहो से अपार समुद्र में सेतु बाधा था, तथा जिन्होंने कोटो से सुरक्षित ऐसी रावण की राजधानी लंका का नाश किया था, ध्यान से जानने योग्य सभी कलाओ से युक्त एवं सर्वत्र व्यापक ऐसे वे श्रीरामजी मेरे मन रूपी पालने में शयन करे ॥६॥

लोकाक्ष्या सेचनाढथातुलबलवपुषा राजमानोविमानः

प्रोन्मीलन्नीलपङ्ककेरुहवटनवनश्यामधामाभिरामः ।

कोदण्डेनेषुणा चोह्लसितकरकजः श्रीविशालः सुमाल-

दिचत्ते स्वापं ममेयादहितविहितकृदोलिकायां स रामः ॥

जिसके दर्शन में लोगो के नेत्र कभी तृप्त नहीं होते ऐसे तथा अतुल बल से युक्त शरीर वाले, निरभिमानी, विकसित नील कमल के समान श्याम वर्ण से मनोहर धनुष तथा बाण से शोभित करकमल वाले, उत्तममाला से विभूषित सभी प्रकार के अतिशयो से युक्त, दुष्टों के निग्रह करने वाले श्रीरामजी मेरे चित्त रूपी पालने में शयन करे ॥७॥

वीराणामग्रगीर्यः सुरदनुजनृणां जन्मिनां वेतरेषा

कर्त्तापाताऽथहर्ता समविरुद्ध्युतो हेयहीनोऽप्यहीनः ।

स्तुत्यो नम्यश्चगम्यश्चिदचिदुभयव्यापिवर्ष्मानिरूष्मा

रामः स्वापं म एयादसितमणितनुर्दोलिकायां स चित्ते ॥

जो श्रीरामजी वीरो के अग्रसर हैं तथा जो देव, दानव, मनुष्य तथा अन्य प्राणियों के कर्ता रक्षक तथा नाश करनेवाले भी हैं, सभी प्रशस्तियों से युक्त हैं हेयगुणों के स्पर्श से भी रहित हैं । तथा जो परात्पर हैं, स्थूल एवं सूक्ष्म चेतन तथा अचेतन को अपने शरीर में समाये हुये हैं तथा सर्वोत्कृष्ट विनय निरभिमानता आदि गुणों से सम्पन्न हैं ऐसे इसलिये केवल वे ही स्तुति के प्रणाम के तथा ध्यान के योग्य हैं ऐसे नीलमणि के समान कान्ति से युक्त शरीरवाले श्री रामजी मेरे मन रूपी पालने में शयन करे मेरा मन सदा ही उनमें लगा रहे ॥८॥

**ततो निवेदितनैवेद्यं मनसा चतुर्भागं परिकल्प्य हनुमदङ्गदसुग्रीवविभीषणेभ्यो-
निवेद्यानन्तरं पूर्वाचार्यादिभ्यः स्वाचार्येभ्यश्चनिवेद्यं शेषं भागवतैः सहभुञ्जीत ।**

अनन्तर श्रीरामजी को निवेदित नैवेद्य को मन से चारभागकी कल्पना करके 'हूं हनुमते नम' इस मन्त्र से श्रीहनुमानजी को तथा 'अ अंगदाय नम' बोलकर श्रीअंगदजी को तथैव 'सुसुग्रीवाय नम' मन्त्र से श्रीसुग्रीव और 'वि विभीषणाय नम' बोलकर श्रीविभीषणजी को निवेदन करने के बाद 'ॐ ब्रह्मादि समस्त पूर्वाचार्येभ्यो नम महा नैवेद्यं समर्पयामि' ऐसा बोलकर समस्त पूर्वाचार्यों को राजभोग का समर्पण करने के बाद 'ॐ स्वाचार्येभ्यो महाप्रसादं समर्पयामि' ऐसा बोलकर स्वाचार्यजी को महाप्रसाद समर्पण करने के बाद शान्तचित्त से भागवत तथा समागत अभ्यागतों के साथ महाप्रसाद का सेवन करे । श्रीवैष्णवों को यह खास खयाल रखना चाहिये कि जब कभी जो कोई भोज्य पदार्थ परेश श्रीरामजी को भोग लगाया जाय पर्योस्त विधि से सभी को समर्पित करके ही स्वयं सेवन करे एकाकी नहीं ।

रामानन्दोपदिष्टेयं श्रीरामार्चनपद्धतिः । मुमुक्षूणां मुदेभूयाच्छ्रीरामप्रीतिकारिणी ॥१॥

अर्चकोयःसमभ्यर्चेदास्थायेमामहर्दिवम् । प्रासाद्य सगणं रामं लभते गतिमुत्तमाम् ॥२॥

इत्यानन्दभाष्यकार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यप्रणीत श्रीवैष्णवमतान्जभास्कर परिशिष्ट

५ श्रीरामार्चनपद्धतिः ५

॥ श्रीरामः शरणं मम ॥

“मङ्गलादीनि मङ्गलमध्यानि मङ्गलान्तानि च शास्त्राणि प्रथन्ते वीरपुरुषाणि भवन्त्यायुष्मत्पुरुषाणि चाध्येतारश्चमङ्गलयुक्ता स्युः” इस स्मृति वचनानुसार आचार्य सम्राट् जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी प्रबन्धप्रकरणान्त में आशीर्वादात्मक मङ्गल वचन पूर्वक प्रारंभोपसंहार करते हैं—

ज गु श्रीरामानन्दाचार्यजी से स्वशिष्य ज गु श्रीसुरसुरानन्दाचार्यजी के “तत्त्वं किम् ? आदि दश प्रश्नों को निमित्त बनाकर सर्वलोकोपकारार्थ उपदिष्ट यह सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी के श्रीचरणों में अनन्य प्रीति करानेवाली श्रीरामार्चनपद्धति सय मुमुक्षुजनोंके लिये सायुज्य मुक्ति प्राप्त कराने वाली हो ॥१॥

जो अर्चक श्रीरामजी की पूजा इस श्रीरामार्चनपद्धति के विधानानुसार सदा त्रिकाल अच्छी तरह से समाराधन करेगा वह श्रीरामजी के सब गणों के साथ उन्हें प्रसन्नकर सर्वोत्तम सायुज्य मुक्ति को प्राप्त करेगा ॥२॥